हिन्दी-व्याकरण ।

(वर्त्तमान अङ्गरेज़ी-व्याकरण के ढँग पर)

जिसे

बाबू गङ्गाप्रसाद

थर्ड मास्टर ज़िला स्कूल बिजनौर ।

ने बनाया ।

Indian Press Series

HINDI-VYAKARNA

OR

HINDI GRAMMATICAL PRIMER

(On the lines of Modern English Grammars)

BY

GANGA PRASAD

3rd Master, District School, Bijnor

Allahabad:

THE INDIAN PRESS

1907

[*Price 0-3-0.*

हिन्दी-व्याकरण ।

(वर्त्तमान अङ्गरेज़ी-व्याकरण के ढँग पर)

जिसे

बाबू गङ्गाप्रसाद

थर्ड मास्टर ज़िला स्कूल बिजनौर

ने बनाया ।

Indian Press Series

HINDI-VYAKARNA

OR

HINDI GRAMMATICAL PRIMER

(On the lines of Modern English Grammars)

BY

GANGA PRASAD

3rd Master, District School, Bijnor

Allahabad:

THE INDIAN PRESS

1907

PREFACE.

This little book is intended to be used in our Vernacular and Anglo-Vernacular Schools. It differs, however, in several respects from the text-books on the subject at present in use.

My object in writing this book has been to deal with the subject, as far as possible, from the English point of view and to establish a sort of relation between English and Hindi Grammar. The writers of existing Grammars have one and all treated the subject from the Sanskrit point of view and have introduced so many Sanskrit elements that it has been almost impossible for the student to understand it thoroughly. Besides Sanskrit terms named after suffixes, &c., not used in Hindi Language (*i. e.*, taratamya तारतम्य) sound not only awkward, but at the same time meaningless to an intelligent reader. The styles of writers of English and Hindi Grammars have, moreover, been so different that neither of these can afford any help to the student in the study of the other.

In the present work I have attempted to bring harmony between English and Hindi Grammar, so that the students of Anglo-Vernacular Schools, where a great stress is laid on English, may learn Hindi Grammar, too, on the same lines, and the students who have passed the V. F. Examination may find it easy to learn English Grammar. English equivalents are given in brackets after each Hindi term.

The special feature of the book is the inductive method of teaching followed all through. Examples are given first and rules are deduced from them. The whole subject has been treated strictly logically, and a great care is taken to choose examples from familiar objects.

Parsing and Analysis of which no traces are found in any old Grammar have been introduced here, and it is hoped that they will prove beneficial in fully mastering the language.

Questions have invariably been given in the end of each chapter to render it easy for the teacher to test the knowledge of his pupils; and in order to present the birds-eye-view of the whole subject a chart is given in the end of the book.

I shall be much obliged to those who will kindly communicate to me any suggestions or corrections that they may think necessary for the improvement of the work.

I am, in the end, much indebted to Pandit Ishwari Datt Shastri, Sanskrit teacher of this School, for his useful suggestions.

GANGA PRASAD.

हिन्दी-व्याकरण ।

पाठ १

अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करने की केवल दो ही विधि हैं, एक भाषण और दूसरी लेख । जब हमको प्यास लगती है तब हम दूसरों से कहते हैं कि हमको प्यास लगी है, पानी दे दो । जब हम घर से बाहर किसी शहर में हों और घर की ख़बर न मिली हो तब पत्र द्वारा घर से कुशल मँगाते हैं इसी को भाषा या बोली कहते हैं ।

भाषा शब्दों से मिल कर बनती है ।

शब्द दो प्रकार के होते हैं एक निरर्थक (Inarticulate) जैसे कुत्ते का भोंकना, घोड़े का हिनहिनाना । दूसरे सार्थक (Articulate) जैसे राम, घोड़ा आदि । सार्थक शब्दों का उच्चारण केवल मनुष्य ही कर सकता है, पशु पक्षी नहीं इसलिए व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों ही का वर्णन होता है ।

शब्द अक्षरों से मिलकर बनते हैं ।

दो अथवा अधिक शब्दों को यदि इस प्रकार जोड़ दिया जाय कि पूरा पूरा आशय समझ में आ जाय तो इसको वाक्य (Sentence) कहते हैं ।

व्याकरण उस विद्या का नाम है जिस से किसी भाषा का ठीक ठीक लिखना पढ़ना आजाय।

हिन्दी-व्याकरण से हिन्दी भाषा का ठीक ठीक बोलना और लिखना आता है।

हिन्दी-व्याकरण के चार विभाग हैं। एक वर्णविचार (Orthography) जिसमें अक्षरों के आकार और उच्चारणआदि का वर्णन है।

दूसरा शब्दविचार (Etymology) जिसमें शब्दों (words) के भेद, रूप आदि का वर्णन है।

तीसरा वाक्यविचार (Syntax) जिसमें वाक्यों के बनाने का विधान है।

चौथा छन्दविचार (Prosody) जिसमें दोहा, चौपाई आदि के बनाने की रीतियें का वर्णन है।

इस पुस्तक में केवल वर्णविचार, शब्दविचार और वाक्यविचार का ही वर्णन होगा। साधारण विद्यार्थियें के लिए छन्दविचार की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न।

१ भाषा किसे कहते हैं? २ शब्द कै प्रकार के होते हैं? ३ व्याकरण में किस प्रकार के शब्दों पर विचार होता है? ४ वाक्य किसे कहते हैं? ५ व्याकरण किसे कहते हैं? ६ हिन्दी व्याकरण के कितने विभाग हैं और उनमें किस किस का वर्णन है।

वर्णविचार (Orthography)।

वर्णविचार (Orhtography) में अक्षरों के आकार, उच्चारण और उनसे नियमानुसार शब्द बनाने का वर्णन है।

वर्ण या अक्षर (Letter) उस छोटी से छोटी ध्वनि को कहते हैं जिसका विभाग न हो सके। जैसे अ, इ, क इत्यादि।

लिखने की भाषा में अक्षर उन सङ्केतों को कहते हैं जो बुद्धिमानों ने उपर्युक्त वर्णों के लिए नियत कर लिये हैं।

वर्णों के समुदाय को **वर्णमाला** (Alphabet) कहते हैं। हिन्दी भाषा की वर्णमाला में ४९ मुख्य अक्षर हैं। इन के दो भेद हैं। स्वर (Vowel) और व्यञ्जन (Consonants)। **स्वर** (Vowel) वह अक्षर है जिसका उच्चारण बिना अन्य अक्षर की सहायता के हो सके जैसे अ, आ, इ, ऊ। **व्यञ्जन** (Consonants) उन अक्षरों का नाम है जो बिना स्वरों की सहायता के नहीं बोले जा सकते, जैसे क्, ख्, ग् इत्यादि।

स्वर १६ हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः।

इनके *दो भेद हैं।

(१) **ह्रस्व** (Short) जिनके उच्चारण में सब से कम काल लगता है। ये पाँच हैं अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

---

* संस्कृत-व्याकरण के आचार्यों ने तीन भेद किये हैं। तीसरा भेद प्लुत है जिसका प्रयोग हिन्दी भाषा में नहीं मिलता; इसलिए वह छोड़ दिया गया।

(२) दीर्घ (Long) जिनके उच्चारण में ह्रस्वों की अपेक्षा दुगना समय लगे। ये नौ हैं आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ ॥

* अं (अनुस्वर) और अः (विसर्ग) ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के पश्चात् बोले जाते हैं, ये अकेले प्रयोग में नहीं आते। जैसे—कं कां गः, गाः।

स्वर जब व्यञ्जनों से मिलते हैं तब उनका रूप पलट जाता है। इनको मात्रा कहते हैं।

प्रत्येक स्वर के नीचे उसकी मात्रा लिखी जाती हैं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	ॢ	ॣ	े	ै	ो	ौ	ं	ः

'अ' की कोई मात्रा नहीं है जिस व्यञ्जन में कोई मात्रा न हो उसमें 'अ' की मात्रा समझनी चाहिए जैसे क, ख। जब व्यञ्जनों को स्वररहित दिखलाना हो तो उसके नीचे ् का चिन्ह लगा देते हैं जैसे क्, ज् इत्यादि। 'इ' की मात्रा व्यञ्जन के पहले लगाते हैं जैसे 'कि'। आ, ई, ओ, औ, अः की पीछे लगाई जाती हैं जैसे 'का' 'की', 'को', 'कौ', 'कः', । उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ की मात्राएँ नीचे लिखी जाती हैं जैसे कु, कू, कृ, कॄ, कॢ, कॣ। ए, ऐ, अं को मात्राएँ ऊपर लगती हैं जैसे 'के' 'कै' 'कं'।

*** मुख्य व्यञ्जन ३३ हैं।**

---

* इनके अतिरिक्त तीन और व्यञ्जन वर्णमाला में गिने जाते हैं क्ष, त्र, ज्ञ परन्तु क्ष, क् और ष् से; त्र, त् और र से; ज्ञ ज् और ञ से मिलकर बनता है। ज्ञ का उच्चारण कोई गकार के साथ और कोई जकार के साथ करते हैं परन्तु जकार अधिक शुद्ध है।

क	ख	ग	घ	ङ	इनको कवर्ग कहते हैं	यह सब मिल कर स्पर्श कहलाते हैं।
च	छ	ज	झ	ञ	,, चवर्ग ,,	
ट	ठ	ड	ढ	ण	,, टवर्ग ,,	
त	थ	द	ध	न	,, तवर्ग ,,	
प	फ	ब	भ	म	,, पवर्ग ,,	
य	र	ल	व		अन्तःस्थ (Semi vowel) कहलाते हैं।	
श	ष	स	ह		ऊष्म (Sibilants) कहलाते हैं।	

जब दो या अधिक व्यञ्जनों के बीच में कोई स्वर न हो और उनको साथ लिखना हो तो उन्हें जोड़ देते हैं इस मेल को संयोग कहते हैं जैसे क्य, त्य, क्ल, क्त्य, च्छ, स्थ्य इत्यादि।

स्थान। मुख के जिस भाग से जो अक्षर बोला जाता है उसे उस अक्षर का **स्थान** कहते हैं। प्रत्येक अक्षर के स्थान नीचे लिखे जाते हैं।

स्थान		अक्षर	
कण्ठ	से	अ आ क ख ग घ ङ ह विसर्ग	बोले जाते हैं
तालू	,,	इ ई च छ ज झ ञ य श	,,
मूर्द्धा	,,	ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष	,,
दन्त	,,	ऌ ॡ त थ द ध न ल स	,,
ओष्ठ	,,	उ ऊ प फ ब भ म	,,
कण्ठ और तालु	,,	ए ऐ	,,
कण्ठ ,, ओष्ठ	,,	ओ औ	,,
दन्त और ओष्ठ	,,	व	,,
नासिका	,,	ङ ञ ण न म	,,
नासिका	,,	अनुस्वार	,,

प्रश्न ।

१ वर्ण किसे कहते हैं ? २ वर्णमाला किसे कहते हैं ? ३ हिन्दीभाषा की वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ? ४ स्वर किनको कहते हैं ? ५ व्यञ्जन किनको कहते हैं ? ६ दीर्घ स्वर कौन कौन से हैं ? ७ इ, ऊ, ए, औ, ऋ, आ इनमें कौन दीर्घ और कौन ह्रस्व हैं ? ८ मात्रा किसे कहते हैं ? ९ ओ, ई इ ऋ की मात्राएं लिखो ? १० ज, ट, न, ल, फ, न, स में सब स्वरों की मात्राएं जोड़ कर दिखाओ ११ ऊष्म कौन कौन से हैं ? १२ कवर्ग और पवर्ग के कौन कौन से अक्षर हैं ? १३ स्थान किसे कहते हैं ? १४ नीचे लिखे अक्षरों के स्थान बताओ । अ स श ल फ ट ङ र च य क ज व म त औ ऌ ह घ न ध ढ़ । १४ नीचे लिखे अक्षरों को संयुक्त करो थ् य, त् र, र् क, श् ल् य, स् थ् य, द् ध् म् प, य् ल् व, ।

पाठ ३

शब्दविचार (Etymology)

शब्दविचार व्याकरण के उस भाग का नाम है जिसमें शब्दों के भेद, रूप, उनके बनाने की विधि तथा उनके प्रयोग में लाने के नियमों का वर्णन है ।

एक वन में सहस्रों वृक्ष होते हैं जिनकी गणना तथा स्मरण बड़ा ही कठिन काम है परन्तु यदि उनकी कोटियाँ बनाली जायँ और प्रत्येक कोटि में कुछ वृक्ष रख लिये जायँ तो उनका स्मरण सहज हो जाता है जैसे सौ वृक्ष आम के, दो सौ गूलर के, पाँच सौ नीम के । पचास पीपल के । इसी प्रकार भाषा शब्दों का वन है । इसमें सहस्रों शब्द हैं । यदि इन शब्दों का हम स्मरण रखना चाहते हैं या उनकी गणना करना चाहते हैं तो हमको चाहिए कि वृक्षों के समान इन शब्दों के भी विभाग या कोटि बना लें ।

शब्दों के इस प्रकार के विभाग को शब्दविभाग (Parts of speech) कहते हैं।

जिस जिस अपेक्षा से शब्दों के अनेक रूप होते हैं उसको शब्दों का अङ्ग (Inflexion) कहते हैं।

शब्दविभाग * आठ हैं। संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया-विशेषण, सम्बन्धवाचक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

(१) संज्ञा शब्द (Nouns)

पुस्तक, फूल, लड़का, गोविन्द, सुख, चाँदी।

जब हम ऊपर लिखे शब्दों को बोलते हैं तब जानते हैं कि यह शब्द किन्हीं वस्तुओं के नाम हैं। जिस वस्तु को हम पढ़ते हैं उसका नाम हमने पुस्तक रख लिया है। जिसको सूंघते हैं उसे फूल कहते हैं। उसी प्रकार लड़का, चाँदी आदि को समझना चाहिए। इस प्रकार के शब्दों को संज्ञा (Nouns) कहते हैं।

संज्ञा (Nouns) किसी वस्तु, किसी स्थान, या किसी मनुष्य के नाम को कहते हैं। जैसे; थाली, दिल्ली, कृष्ण।

प्रश्न।

नीचे लिखे वाक्यों में जो संज्ञाशब्द हों उनको बताओ। राम घर को जाता है। लड़के खेलते हैं। घोड़े दौड़ते हैं। आम गिरता है। गोविन्द कुर्सीपर बैठा। पुस्तक लाओ। सूरज निकला। सोने की अंगूठी लाओ। वह ज्वर में पड़ा है। पाठशाला जाओ और गुरु जी को दण्डवत् करो। दो मनुष्यों में युद्ध हुआ।

---

* संस्कृत भाषा में शब्दों के केवल तीन ही भेद हैं—संज्ञा, क्रिया, अव्यय संज्ञा में विशेषण, सर्वनाम भी आ जाते हैं और अव्यय में क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक, और विस्मयादिबोधक आ जाते हैं परन्तु अंगरेज़ी-पाठशालाओं के विद्यार्थिओं को समझाने के लिए हिन्दी भाषा के ८ शब्द विभाग करने अधिक उपयोगी होंगे।

(२) विशेषण (Adjectives)

काला घोड़ा, अच्छा लड़का, बुरी किताब, चमकीला खिलौना। जब हम कहते हैं कि 'वह काला घोड़ा है' तो 'काला' शब्द से हम घोड़े के एक गुण को बताते हैं। इसी प्रकार 'अच्छा' लड़के के और 'बुरी' किताब के 'चमकीला' खिलौना के गुणों को बताता है। ऐसे शब्द विशेषण (Adjectives) कहलाते हैं।

विशेषण (Adjectives) उनको कहते हैं जो किसी संज्ञा शब्द अथवा सर्वनाम के साथ मिलकर उन शब्दों के वाच्य वस्तुओं के गुणों को प्रकाशित करते हैं जैसे काला घोड़ा।

प्रश्न।

नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण बताओ।

१ मोहन के पास एक बड़ा चाकू है। २ हरी घास पर मत चलो। ३ लाल स्याही से लिखो। ४ गंगा बड़ी नदी है। ५ वह बुरा लड़का है। ६ मैं चमकीला शीशा लूगा। ७ मीठी नारंगी ला दो। ८ ठंडा पानी कहां है। ९ वह गर्म रोटी खाता है। १० दो छोटी बिल्लियां चार बड़े बडे चूहों को पकड़ ले गई।

(३) सर्वनाम (Pronouns.)

राम घर में हैं उस को बुलाओ। मोहन अपनी पुस्तक पढ़ रहा है। कृष्णने अपने लड़के को मारा।

उपरोक्त वाक्यों में शब्द 'उस' राम के लिए, शब्द 'अपनी' मोहन के लिए, शब्द 'अपने' कृष्ण के लिए आया है। यदि हम कहें कि 'राम घर में है राम को बुलाओ', 'मोहन मोहन की पुस्तक पढ़ रहा है,' 'कृष्णने कृष्ण के लड़के को मारा', तो बहुत बुरा प्रतीत होगा। इसलिए राम, मोहन, और कृष्णको केवल एक वार कहकर

पश्चात् उनके स्थानपर उस, अपने, आदि शब्द रखदेते हैं इन शब्दों को व्याकरण में सर्वनाम (Pronouns) कहते हैं।

सर्वनाम (Pronouns) वह शब्द हैं जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर आते हैं।

प्रश्न।

नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम बताओ।

राम कल घर को गया वहाँ जाकर उसने अपनी माता से कहा कि मुझे भूख लगी है; भोजन दे दो। उसने कहा कि हे बेटा, तुम्हारे पिता जी बाज़ार से नारंगी लाते होंगे, उनको खाकर अपनी भूख शांत कर लेना।

---

(४) क्रिया (Verb)

श्याम खाना खाता है। सीता अयोध्या में आई। तुम कहां जाते हो। ऊपर लिखे वाक्यों में 'खाता है' 'आई', 'जाते हो' शब्दों से किसी काम का होना या करना पाया जाता है। ऐसे शब्दों को क्रिया (verb) कहते हैं।

क्रिया (verb) वह है जिससे किसी काम का होना या करना ज्ञात हो।

प्रश्न।

नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाएं बताओ :—

मैं कल घर को जाऊंगा। लड़कियाँ खेलती हैं। कुत्ता थाली को चाटता है। वृक्ष वायु में हिलते हैं। इनको मत मारो। राम ने लङ्का पर चढ़ाई की। ताल में कमल खिल रहा है।

(५) क्रियाविशेषण (Adverbs)

लड़का शीघ्र दोड़ता। घोड़ा शनैः शनैः चलता है। राम झट भूमि पर गिरपड़ा। ऊपर के वाक्यों में 'शीघ्र' दौड़ने का प्रकार 'शनैः शनैः' चलने का प्रकार और 'झट' गिरपड़ने का काल बताता है। ऐसे शब्दों को क्रियाविशेषण (Adverb) कहते हैं।

क्रियाविशेषण (Adverb) वह शब्द हैं जिनसे क्रिया में किसी प्रकार की विशेषता पाई जाय।

प्रश्न।

नीचे के वाक्यों में क्रियाविशेषण बताओ।

लड़का अच्छा पढ़ता है। वह ख़राब लिखता है। तुम वहां क्यों गये थे? हम सहज सहज बातें करते हैं। ज्यों ज्यों तुम बड़े होगे त्यों त्यों तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट होगी। कभी कभी यहाँ भी आया करो। परस्पर मित्रता से रहना चाहिए।

(६) सम्बन्धवाचक (Prepositions)

पुस्तक मेज़ पर है। उसके बिना मैं काम नहीं कर सकता।

यहां 'पर' शब्द से पुस्तक का मेज़ के साथ सम्बन्ध और 'बिना' शब्द से 'उसके' का अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध ज्ञात होता है। ऐसे शब्द सम्बन्धवाचक (Prepositions) कहलाते हैं।

सम्बन्धवाचक (Preposition) वह है जो किसी संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताता है।

प्रश्न ।

नीचे के वाक्यों में सम्बन्धवाचक शब्द बताओ ।

मेरा घर कुएँ के पास है । कबूतर छत के ऊपर बैठा है । मन्दिर के भीतर वह कौन चारपाई पर सोता है । राम कृष्ण के सदृश है । तुम्हारे बिना इस कार्य्य को कौन कर सक्ता है ।

(७) समुच्चयबोधक (Conjunctions)

राम और लक्ष्मण अयोध्या से चले । मैं आया और उसने मुझे पत्र दिया । यह बकरी है या भेड़ ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और' और 'या' शब्द दो शब्दों अथवा वाक्यों को जोड़ते हैं इसलिए इनको समुच्चयबोधक (Conjunctions) शब्द कहते हैं ।

समुच्चयबोधक शब्द (Conjunctions) वह शब्द हैं जो दो शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ते हैं ।

प्रश्न ।

नीचे लिखे वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्द कौन कौन हैं ?

तुम गये परन्तु मैं आया । लड़का और लड़की इस घर में रहते हैं । यदि तुम वहां जाओ तो उनसे मेरा नमस्ते कहना । तुम बुरे आदमी हो तो भी मैं तुमसे स्नेह रखता हूं । उसने कहा कि तुम को ऐसी बात कहनी नहीं चाहिए ।

(८) विस्मयादिबोधक (Interjections)

ओहो तुम आगये । बापरे बाप कैसी भई । हाय हाय मैं तो मर गया ।

ऊपर के वाक्यों में 'ओहो,' 'बापरे बाप', 'हाय हाय' शब्द हर्ष शोक आदि भावों के द्योतक हैं । इनका नाम विस्मयादिबोधक है ।

विस्मयादिबोधक (Interjections) वह शब्द हैं जिनसे हर्ष शोक आदि अंतः करण के भाव प्रकाशित हों।

प्रश्न ।

नीचे के वाक्यों में विस्मयादि बोधक शब्द बताओ।

वाह वाह मैं तो वहां नहीं जाऊंगा। छी छी तुम तो बड़े बुरे आदमी हो। ओ हो आपको इतना घमंड है। धिक् धिक् ऐसे लड़कों के पास भी न बैठना चाहिए।

नीचे लिखे वाक्यों में कौन कौन शब्द किस किस विभाग का है।

मुझे यहां आये दो मास व्यतीत हुए। लोग कहते हैं कि शहर में रोग फैला हुआ है। बड़े आदमी गर्मियों में पहाड़ों के ऊपर निवास करते हैं। भारतवर्ष प्राचीन काल में अपनी विद्या के लिए प्रसिद्ध था। हाय तुम तो कुछ भी नहीं समझते। कौन कहता है कि मैं बीमार हूं। जो जैसा करेगा वह वैसा पायेगा। ओहो आप यहां थे। वाह कैसा सुगन्धित वायु है।

पाठ ४

संज्ञा (Nouns)

संज्ञा वह शब्द है जो किसी वस्तु, स्थान, या मनुष्य का नाम हो। जैसे वृक्ष, लाहौर, देवदत्त।

हाथी, बालक, ऊंट, कुत्ता, फल।

उपरोक्त शब्द किसी एक ही वस्तु के लिए नहीं आते किन्तु उस प्रकार की सब वस्तुओं को प्रकट करते हैं। हम सब हाथियों को 'हाथी' शब्द से पुकार सकते हैं। 'बालक' शब्द प्रत्येक बालक के लिये प्रयोग में आता है। 'कुत्ता' इस जाति के प्रत्येक व्यक्ति का नाम है। इन शब्दों को जातिवाचक कहते हैं।

जातिवाचक (Common Nouns) वह शब्द हैं जिनके अर्थ से जातिमात्र का बोध हो।

राम, कृष्ण, सोमदत्त, सीता, मुम्बई।

उपर्युक्त शब्दों से एक मनुष्य, या एक शहर से अधिक का बोध नहीं हो सकता। राम एक पुरुष विशेष का नाम है। मुम्बई नगर विशेष का। सब नगरों को मुम्बई नहीं कह सकते। सब पुरुषों को राम या सोमदत्त नहीं कह सकते। ऐसे शब्द व्यक्तिवाचक कहलाते हैं।

व्यक्तिवाचक शब्द (Proper Nouns) वह हैं जिनसे केवल एक व्यक्ति का बोध हो।

लड़कपन, गर्मी, बुढ़ापा, सजावट।

ऊपर के शब्द न तो किसी व्यक्तिविशेष का बोध कराते हैं और न किसी जाति का। वे तो केवल उन गुणों का बोध कराते हैं जो किसी व्यक्ति या जाति में पाये जायँ, या किसी काम का बोध कराते हैं। ऐसे शब्द भाववाचक कहलाते हैं।

भाववाचक (Abstract Nouns) वह शब्द हैं जिनसे किसी के धर्म स्वभाव या गुण या किसी काम का बोध हो।

भाववाचक शब्द तीन प्रकार के शब्दों से बनते हैं।

(१) जातिवाचक शब्दों से	जैसे लड़का	से	लड़कपन
	मनुष्य	से	मनुष्यत्व
(२) गुणवाचक शब्दों से	जैसे मीठा	से	मिठास
	गर्म	से	गर्मी
(३) क्रिया से	जैसे सजाना	से	सजावट
	कूदना	से	कूद
	लड़ना	से	लड़ाई

इन तीन के अतिरिक्त अंगरेज़ी में दो और भी भेद हैं।

(१) समुदायवाचक (Collective Nouns) जो किसी समुदाय को बताते हैं जैसे झुण्ड, भीड़।

(२) द्रव्यवाचक (Material nouns) जो किसी द्रव्य को बताते हैं जैसे सोना, चाँदी, दूध।

परन्तु हिन्दी भाषा में यह दोनों जातिवाचक शब्द ही कहलाते हैं।

प्रश्न।

नीचे लिखे शब्द किस प्रकार के हैं ?

लोटा, आगरा, शीत, भूसा, बाग़, आम, गन्ना, खेल, सूर्य, लकड़ी, दूध, मिठास, बुढ़ापा, सिलाई, ईंट, चौकी, सड़क, माता, छत, घास, सोमदेव, नारंगी, गन्ना, श्रीकृष्ण।

पाठ ५

लिङ्ग (Gender)

संज्ञाशब्दों के तीन अङ्ग हैं, लिङ्ग, वचन और कारक।

मनुष्य	स्त्री
राम	सीता
घोड़ा	घोड़ी

उपर्युक्त शब्दों में 'मनुष्य', 'राम' और 'घोड़ा' पुरुष या नर के वाचक हैं और स्त्री, सीता, घोड़ी स्त्रीजाति का बोध कराते हैं। जिससे यह बात ज्ञात हो कि अमुक शब्द स्त्रीजाति का बोधक है या पुरुषजाति का। उसको लिङ्ग (Gender) कहते हैं।

हिन्दी भाषा में दो लिङ्ग हैं। स्त्री लिङ्ग और पुंलिङ्ग।

(अ) प्राणिवाचक शब्दों का लिङ्ग जानना कुछ कठिन नहीं। जैसे लड़का, घोड़ा, कुत्ता, बैल पुंलिङ्ग हैं और लड़की, घोड़ी, कुतिया, गाय जो स्त्रीजाति के बोधक हैं स्त्रीलिङ्ग हैं।

(आ) अप्राणिवाचक शब्दों के लिङ्ग जानने में कठिनता होती है। उसकी रीतियां नीचे लिखी जाती हैं।

नीचे लिखे शब्द बहुधा पुंलिङ्ग होते हैं:—

(१) जिनके अन्तमें आ हो जैसे घड़ा, जाड़ा, लोटा, कुर्ता।

(२) जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आव, पन, पा, त्व हो, जैसे चढ़ाव, लड़कपन, बुढ़ापा, मनुष्यत्व।

(३) सब पहाड़ों के नाम जैसे हिमालय, नीलगिरी।

(४) महीनों और दिनों के नाम, जैसे चैत्र, श्रावण, रविवार, शुक्र।

(५) तारागणों के नाम जैसे सूर्य्य, चन्द्र।

(६) वर्णमाला के इ, ई, ऋ ॠ, ऌ ॡ को छोड़कर सब अक्षर।

नीचे लिखे शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं:—

(१) जिनके अन्तमें ई हो जैसे रोटी, टोपी, कुर्सी। परन्तु ऐसे कुछ शब्द पुंलिङ्ग भी होते हैं जैसे घी, दही, मोती, पानी, जी।

(२) संस्कृत के आकारान्त शब्द जो भाषा में बोले जाते हैं जैसे माला, लता।

(३) सब नदियों के नाम जैसे गङ्गा, गोमती, नर्बदा।

(४) भाववाचक शब्द जिनके अन्तमें, आई, ता, न्त, ति, श, न, वट, हट हो जैसे चिकनाई, मित्रता, गढ़न्त, गति, कोशिश, सूजन, मिलावट, घबराहट।

(५) वर्णमाला के अक्षर इ ई, ऋ ॠ, ऌ ॡ।

(६) अर्बी भाषा के शब्द जिनके अन्तमें 'त' या 'ईर' हो जैसे कसरत, ग़फ़लत, तक़दीर, परन्तु शर्बत, हज़रत पुंलिङ्ग होते हैं।

अँगरेज़ी के शब्द जो भाषा में बोले जाते हैं स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनों होते हैं। इनका कोई नियम नहीं जैसे कोट, बटन, आफ़िस पुंलिङ्ग हैं और बोतल, चिमनी, डेस्क आदि स्त्रीलिङ्ग हैं।

अब पुलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने की कुछ रीतियाँ लिखी जाती हैं।

(१) शब्दों का बिल्कुल पलट जाना। जैसे—

पुरुष	स्त्री
राजा	रानी
नर	मादा
भाई	बहिन
बैल	गाय
पिता	माता
पुत्र	कन्या

(२) आकारान्त शब्दों के आ को ई, इया, या अ से बदल देते हैं। जैसे—

लड़का	लड़की	मुर्गा	मुर्गी
चकवा	चकवी	घोड़ा	घोड़ी
बरछा	बरछा	बछेड़ा	बछेड़ी
बेटा	बेटी	कुत्ता	कुतिया
		क्वाँरा	क्वाँरी
लोटा	लुटिया	भैंसा	भैंस
चूहा	चुहिया		

(३) व्यापारियों के अकारान्त, आकारान्त और ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के अ, आ, ई के स्थान में इन आता है। जैसे—

कसेरा	कसेरिन	चमार	चमारिन
जुलाहा	जुलाहन	नाई	नाइन
कहार	कहारिन	धोबी	धोबिन
लोहार	लोहारिन	तेली	तेलिन

(४) पदवीवाचक शब्दों के अन्तमें आइन लगादेते हैं जैसे॥

पण्डित	पण्डिताइन	ठाकुर	ठकुराइन
पाण्डे	पण्डाइन	बाबू	बबुआइन
दुबे	दुबाइन	ओझा	ओझाइन

(५) कुछ शब्दों के अन्तमें अनियम नी लगादेते हैं ॥

ऊंट	ऊंटनी	हाथी	हथिनी
बाघ	बाघनी		
सिंह	सिंहनी		

प्रश्न ।

(१) निम्न लिखित शब्दों के लिङ्ग बताओ ?

तोता, मैना, किताब, खाट, मेज़, कावेरी, समानता, बचपन, कबूतर, सुनार, बुध, मई, ज्येष्ठ, राजा, टोपी, पाठशाला, कुर्सी, घटा, कमिश्नर, पाई, अल्प, बन्दर, नाग, कुर्ता ।

(२) पुंलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के नियम लिखो और प्रत्येक के चार चार उदाहरण दो ।

(३) नीचे लिखे शब्दों के रूप स्त्रीलिङ्ग में क्या होंगे ?

नाई, भतीजा, रस्सा, मास्टर, आदमी, बैल, कुत्ता, मुर्ग़ा, मोर, गीदड़, भैंसा, लड़का, सुअर, हिरन, मेंढक, शेर, पिल्ला ।

पाठ ५

वचन (Number) ।

लड़का	लड़के
स्त्री	स्त्रियाँ
गाय	गायें
मेवा	मेवे

ऊपर के शब्दों में पहिले समूह के शब्द एक के वाचक हैं और दूसरे एक से अधिक के । जिससे यह ज्ञात होता है कि वह वस्तु जिसका एक शब्द नाम है एक है वा अधिक, उसको वचन (Number) कहते हैं ।

भाषा में दो वचन होते हैं। एकवचन (Singular) जो एक का द्योतक है और बहुवचन (Plural) जो एक से अधिक को जतलाता है।

प्रायः एक वचन और बहुवचनों के रूपों में कुछ भेद नहीं होता। वे केवल क्रिया या आशय से पहिचाने जाते हैं जैसे मनुष्य आता है और मनुष्य आते हैं। हमने लड्डू खाया और हमने लड्डू खाये।

कभी कभी बहुवचन के अर्थ प्रकाशित करने के लिए जाति, गण, लोग, जन, वर्ग लगा देते हैं जैसे बालकगण, मनुष्यजाति, ब्राह्मणलोग, बन्धुवर्ग, गुरुजन इत्यादि।

एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ नियम नीचे लिखे जाते हैं*।

(१) स्त्रीलिङ्ग अकारान्त शब्दों के अ का एं हो जाता है जैसे भैंस भैंसें, रात रातें, गाय गायें। पुंलिङ्ग अकारान्त शब्द वैसेही रहते हैं जैसे बालक आया, बालक आये।

(२) स्त्रीलिङ्ग आकारान्त शब्दों के अन्त में एं या यें लगा देते हैं जैसे लठिया लठियाएं, माला मालाएं।

पुंलिङ्ग आकारान्त शब्दों के आ को ए हो जाता है जैसे घोड़ा घोड़े, कुत्ता कुत्ते।

(३) स्त्रीलिङ्ग इकारान्त शब्दों में यां जोड़ देते हैं जैसे पाँति पाँतियां, गति, गतियाँ।

पुंलिङ्ग इकारान्त शब्द प्रायः वैसे ही रहते हैं जैसे मुनि बोला और मुनि बोले।

---

* ये नियम केवल विभक्तिरहित शब्दों के बहुवचन बनाने के हैं। विभक्तियों में बहुत सी तबदीलियां होजाती हैं जोकि विभक्तियों के साथ वर्णन की जायँगी।

(४) स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्दों के ई को इ करके यां जोड़ देते हैं जैसे लड़की, लड़कियाँ; थाली, थालियाँ।

पुंलिङ्ग शब्द दोनों वचनों में एक से रहते हैं।

(५) स्त्रीलिङ्ग उकारान्त शब्दों के अन्त में एं या यें लगा देते हैं जैसे वस्तु वस्तुएं।

पुंलिङ्ग शब्दों में रूपभेद नहीं होता।

(६) स्त्रीलिङ्ग ऊकारान्त शब्दों के ऊ को उ करके यें या एं लगा देते हैं जैसे बहू, बहुएं या बहुयें, झाड़ू, झाड़ुएं या झाड़ुयें परन्तु पुंलिङ्ग शब्द दोनों वचनों में समान रहते हैं।

(७) एकारान्त और ओकारान्त शब्दों के आगे प्रायः ओं लगा देते हैं।

जो अंग्रेज़ी शब्द भाषा में बोले जाते हैं उनके बहुवचन भाषा के उन शब्दों के सदृश बनते हैं जो उनसे अधिक समानता रखते हैं जैसे कम्पनी, कम्पनियां; लम्प, लम्पें—

प्रश्न।

१ वचन किसे कहते हैं। २ ईकारान्त शब्दों के बहुवचन कैसे बनते हैं। ३ ऊकारान्त शब्दों के बहुवचन बनाने की रीति लिखो। ४ निम्न लिखित शब्दों के बहुवचन बनाओ। किताब, काग़ज़, पंख, क़लम, दवात, चाकू, निब, कुर्सी, जूता, लाठी, तकिया, धोती, वकील, दरी, छाता, बेंच, ईंट, खाट, लालटेन, बांस, बालक, बालटी, गाड़ी, बटिया।

पाठ ६

कारक (Case)

राम ने रावण को लङ्का में मारा

ऊपर के वाक्य को पढ़ो और बताओ कि संज्ञा शब्द कौन कौन हैं? तीन, राम, रावण और लङ्का। इन का क्रिया के साथ क्या

सम्बन्ध है ! राम मारने के काम का करनेवाला है। रावण पर मारने का फल पड़ता है। लङ्का वह स्थान है जहाँ वह काम किया गया। जिससे संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया या वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध ज्ञात होता है उसे कारक (Case) कहते हैं।

हिन्दी भाषा में आठ कारक होते हैं। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन।

जो चिन्ह संज्ञा शब्दों में लगकर कारक को जतलाते हैं उनको विभक्ति (Case endings) कहते हैं जैसे ने, को, में।

क्रिया के करने वाले को कर्त्ता (Nominative) कहते हैं

(१) अकर्मक क्रिया के कर्त्ता के अन्त में कोई चिन्ह नहीं लगाते।

(२) सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के अन्त में भूतकाल में 'ने' चिन्ह लगता है जैसे बालक ने मिट्टी खाई, तुमने शीशा देखा।

(३) जो सकर्मक क्रिया 'लाना', 'भूलना' और 'बोलना' से बनती हैं या जिनके साथ 'जाना', 'चुकना', 'लगना', 'सकना' लग जाते हैं उनके कर्त्ता के आगे कोई चिन्ह नहीं लगता। जैसे राम आम लाया, मोहन कुछ न बोला, वह पाठ भूल गया, लक्ष्मण काम को करने लगा, गोविन्द इसको न लिख सका इत्यादि।

(४) जनना, समझना और बकना क्रियाओं के भूतकाल में कर्त्ता के आगे चिन्ह 'ने' लगता भी है और नहीं भी लगता। जैसे 'उसने बच्चा जना' या 'वह बच्चा जनी'।

(५) कर्मप्रधान क्रिया के कर्ता के आगे कोई चिन्ह नहीं लगता। जैसे--वह लाया गया, वे मारे गये।

कर्म्म (Objective) उसे कहते हैं जिसमें क्रिया का फल रहे जैसे उसने लड़के को मारा।

(१) कर्म का चिन्ह 'को' है। यह कभी आता है कभी नहीं आता। जैसे 'वह आम को खाता है' या 'वह आम खाता है'।

(२) प्राणिवाचक शब्दों में बहुधा 'को' लाते ही हैं जैसे 'गोविन्द को मारो'।

(३) * कर्म्मप्रधान क्रियाओं का कर्म नहीं होता किन्तु इनका 'कर्म्म' कारक 'कर्त्तृ-कारक' हो जाता है जैसे 'रावण मारा गया'।

करण (Instrumental) वह है जिसके द्वारा कोई कार्य्य किया जाय। इसके चिन्ह 'से' 'हेतु' 'द्वारा' 'कारण' हैं। जैसे उसने क़लम से लिखा, मेरे द्वारा रामने उसे कहला भेजा।

संप्रदान (Dative or Indirect object) वह है जिसके लिए कोई कार्य्य किया जाय। इसके चिन्ह 'को' 'के लिये' 'अर्थ' और 'निमित्त' हैं जैसे 'मैंने रामको एक रुपया दिया'। 'उसने देवदत्त के लिए (के अर्थ या के निमित्त) चार आम दिये।

अपादान† (Ablative) वह है जो क्रिया के विभाग की अवधि को प्रकट करे। उसका चिन्ह 'से' है जैसे 'वृक्ष से आम गिरा'।

सम्बन्ध (Possessive) वह कारक है जो सम्बन्ध या स्वत्व का प्रकाश करे। इसके चिन्ह 'का' 'के' 'की' हैं।

जो वस्तु किसी वस्तु पर अपना स्वत्व प्रकट करे उसके वाचक को भेदक और जिसपर स्वत्व हो उसको भेद्य कहते हैं। जैसे 'लक्ष्मण

---

* संस्कृत में इसको कर्म्म ही कहते हैं परन्तु उसके रूप प्रथमा के अनुसार बनाते हैं जैसे 'स मात्रा प्राप्यते' 'वह माता से पाया जाता है' यहां 'सः' प्रथमा है इसलिए 'वह' को भी कर्तृकारक कहना चाहिए।

† नोट—करण और अपादान के चिन्ह समान हैं परन्तु वे आशय से पहिचाने जाते हैं। जैसे 'वह क़लम से लिखता है' में 'क़लम से' करण है। 'वह छत से गिर पड़ा' में 'छत से' अपादान है।

की घड़ी' में 'लक्ष्मण' भेदक और 'घड़ी' भेद्य है। सम्बन्ध के चिन्ह भेद्य की अपेक्षा से आते हैं। भेद्य स्त्रीलिङ्ग हो तो 'की' और भेद्य एक वचन पुंल्लिङ्ग हो तो 'का' और बहुवचन पुंल्लिङ्ग हो तो 'के' आता है। जैसे—'राम का घोड़ा' 'राम के घोड़े' और 'राम की घोड़ी'।

अधिकरण (Locative) उस स्थान का द्योतक है जहाँ क्रिया की जाय। उसके चिन्ह 'में', 'पर', 'पास' हैं। जैसे 'कुए में' 'कुए पर' 'कुए के पास'।

सम्बोधन (Vocative case) वह कारक है जिससे किसी का पुकारना पाया जाय। उसके चिन्ह हे, अरे, रे, हैं। जैसे 'हे राम', 'रे गोविन्द', 'अरे भाई'।

नाम वाचक शब्दों के लिङ्ग, वचन और कारक में जो जो रूप बनते हैं वह आगे लिखे जाते हैं।

अकारान्त पुंल्लिङ्ग मनुष्य शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मनुष्य, मनुष्य ने	मनुष्य, मनुष्यों ने
कर्म	मनुष्य को	मनुष्यों को
करण	मनुष्य से	मनुष्यों से
सम्प्रदान	मनुष्य को, के लिए	मनुष्यों को, के लिए
अपादान	मनुष्य से	मनुष्यों से
सम्बन्ध	मनुष्य का, के, की	मनुष्यों का, के, की
अधिकरण	मनुष्य में, पै, पर	मनुष्यों में, पै, पर
सम्बोधन	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द।

कर्त्ता	गाय, गाय ने	गायें, गायों ने
कर्म	गाय को	गायों को

करण	गाय से	गायों से
सम्प्रदान	गाय को, के लिए	गायों को, के लिए
अपादान	गाय से	गायों से
सम्बन्ध	गाय का, के, की	गायों का, के, की
अधिकरण	गाय पर पै, में	गायों पर, पै, में
सम्बोधन	हे गाय	हे गायो

आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द ।

कर्त्ता	कुत्ता, कुत्ते ने	कुत्ते, कुत्तों ने
कर्म	कुत्ते को	कुत्तों को
करण	कुत्ते से	कुत्तों से
सम्प्रदान	कुत्त को, के लिए	कुत्तों को, के लिए
अपादान	कुत्ते से	कुत्तों से
सम्बन्ध	कुत्त का, के, का	कुत्तों का, के, की
अधिकरण	कुत्ते पर, पै, में	कुत्तों पर, पै, में
सम्बोधन	हे कुत्ते	हे कुत्तो

आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द चाचा ।

कर्त्ता	चाचा, चाचा ने	चाचा, चाचों ने, चाचाओं ने
कर्म	चाचा को	चाचों को, चाचाओं को
करण	चाचा से	चाचों से, चाचाओं से
सम्प्रदान	चाचाको, के लिए	चाचों को, के लिए चाचाओं को, के लिए
अपादान	चाचा से	चाचों से, चाचाओं से
सम्बन्ध	चाचा का, के, की	चाचों का, के, की चाचाओं का, के, की

अधिकरण	चाचा पर, पै, में	चाचों पर, पै, में चाचाओं, पर, पै, में
सम्बोधन	हे चाचा	हे चाचो, हे चाचाओ

भैया दादा इत्यादि रिश्तेदारी के नामों के रूप चाचा शब्द के समान बनते हैं ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

कर्त्ता	माला, माला ने	माला, मालों ने, मालाओं ने
कर्म	माला को	मालों को, मालाओं को
करण	माला से	मालों से, मालाओं से
सम्प्रदान	माला को, के लिए	मालोंको के, लिए मालाओं को, के लिए
अपादान	माला से	मालों से, मालाओं से
सम्बन्ध	माला का–के–की	मालों का, के, की, मालाओं का, के, की
अधिकरण	माला में, पर, पै	मालों में, पर, पै, मालाओं में, पर, पै
सम्बोधन	हे माला, हे माले	हे मालो, हे मलाओ

इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द ।

कर्त्ता	मुनि, मुनि ने	मुनि, मुनियों ने
कर्म	मुनि को	मुनियों को
करण	मुनि से	मुनियों से
सम्प्रदान	मुनि को, के लिए	मुनियों को, के लिए
अपादान	मुनि से	मुनियों से
सम्बन्ध	मुनि का, के, की	मुनियों का, के, की
अधिकरण	मुनि में, पर, पै	मुनियों में, पर, पै
सम्बोधन	हे मुनि	हे मुनि, हे मुनियो

इकारान्त स्त्री लिङ्ग शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं ॥

ईकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द ।

कर्त्ता	माली, माली ने	माली, मालियों ने
कर्म	माली को	मालियों को
करण	माली से	मालियों से
सम्प्रदान	माली को, के, लिए	मालियों को के लिए
अपादान	माली से	मालियों से
सम्बन्ध	माला का, के, की	मालियों का, के, की
अधिकरण	माली में, पर, पै	मालियों पर, पै में,
सम्बोधन	हे माली	हे माली, हे मालियो

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'माली' शब्द के समान होते हैं।

उकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द ।

कर्त्ता	गुरु, गुरु ने	गुरु, गुरुओं ने
कर्म	गुरु को	गुरुओं को
करण	गुरु से	गुरुओं से
सम्प्रदान	गुरु को, के लिए	गुरुओं को, के लिए
अपादान	गुरु से	गुरुओं से
सम्बन्ध	गुरु का, के, की	गुरुओं का, के, की
अधिकरण	गुरु पर, पै, में	गुरुओं पर, पै, में
सम्बोधन	हे गुरु,	हे गुरु, हे गुरुओ

उकारान्तस्त्री लिङ्ग के रूप भी पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

ऊकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द ।

कर्त्ता	डाकू, डाकू ने	डाकू, डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को

करण	डाकू से	डाकुओं से
सम्प्रदान	डाकू के लिए, को	डाकुओं को, के, लिए
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बन्ध	डाकू का, के, की	डाकुओं का, के, की
अधिकरण	डाकू पर, पै, में	डाकुओं पर, पै, में
सम्बोधन	हे डाकू	हे डाकू, हे डाकुओ

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं।

एकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द।

कर्त्ता	दुबे, दुबे ने	दुबे, दुबेओं ने
कर्म	दुबे को	दुबेओं को
करण	दुबे से	दुबेओं से
सम्प्रदान	दुबे को, के, लिए	दुबेओं को, के, लिए
अपादान	दुबे से	दुबेओं से
सम्बन्ध	दुबे का, के, की	दुबेओं का, के, की
अधिकरण	दुबे पर, पै, में	दुबेओं पर, पै, में
सम्बोधन	हे दुबे	हे दुबेओ

एकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'दुबे' के समान होते हैं।

ओकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के रूप।

कर्त्ता	ऊधो, ऊधो ने	ऊधो, ऊधों ने
कर्म	ऊधो को	ऊधों को
करण	ऊधो से	ऊधों से
सम्प्रदान	ऊधो को, के, लिए	ऊधों को, के, लिए
अपादान	ऊधो से	ऊधों से
सम्बन्ध	ऊधो का, के, की	ऊधों का, के, की

अधिकरण	ऊधो पर, पै, में	ऊधों पर, पै, में
सम्बोधन	हे ऊधो	हे ऊधो

ओकारान्त स्त्री लिङ्ग शब्दों के रूप भी ऊधो के समान बनते हैं।

प्रश्न।

१—कारक किसे कहते हैं? २—भाषा में कितने कारक हैं? ३—सब कारकों की परिभाषा चिन्हों सहित लिखो। ४—निम्न लिखित वाक्यों में संज्ञाशब्दों के कारक बताओ।

राम कल कलकत्ते गया था, वहां से वह तीन अनार लाया और अपने लड़कों को दिये। पाठशाला में जो लड़के पढ़ते हैं उनसे कह दो कि तुम शोर न मचाया करो। देवदत्त का पुत्र चाकू. से क़लमबनाता था। इन वृक्षों पर बहुत से फल लगे हैं; इनको लकड़ी से तोड़ कर बालकों को दे दो। बेंच पर बैठकर पाठ याद करो।

५—नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो।

चार माली से मैं फूलों लाया। गायों आरही हैं। इन पुस्तकें का क्या नाम है। खेतें पर जाकर अन्न ले आओ। चार मकाने से आठ मनुष्यों आये।

६—नीचे के शब्दों के रूप लिखो।

खाट, फूल, स्त्री, पति, चबूतरा, भादों, पांडे, बहू, शीशी, राहु।

पाठ ७

शब्दनिरुक्ति (Parsing)

किसी शब्द के शब्दविभाग, लिङ्ग, वचन, कारक, काल आदि अङ्गों को पृथक् पृथक् बतलाने को शब्दनिरुक्ति (Parsing) कहते हैं।

संज्ञा-शब्दों की शब्दनिरुक्ति में लिङ्ग, वचन, कारक और उनका वाक्यके अन्य शब्दों से सम्बन्ध बतलाना होता है। जैसे 'सोमदेवने भूमित्र को एक ग्राम दिया' में—

सोमदेव, व्यक्तिवाचक, पुंल्लिङ्ग, एकवचन, कर्त्ताकारक, 'दिया' क्रिया का कर्त्ता है।

भूमित्रको व्यक्तिवाचक, पुंल्लिङ्ग, एकवचन, सम्प्रदानकारक, सकर्मक क्रिया 'दिया' का सम्प्रदान है।

ग्राम जातिवचक, पुंल्लिङ्ग, एकवाचन, कर्मकारक, सकर्म्मक क्रिया 'दिया' का कर्म है।

प्रश्न।

नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाशब्दों की शब्दनिरुक्ति लिखो ?

राम की किताब अलमारी में है। दोनों लड़के खाट पर सो रहे हैं। दस ईंटें इस चबूतरे के ऊपर पड़ी हैं। सिपाहियों ने तलवार से शत्रु का शिर काट लिया। जब आदमी कुएं से निकला तो उसके कपड़े उतार लिये गये। रामायण को वाल्मीकि नें बनाया है।

पाठ ८

विशेषण (Adjectives)

विशेषण (Adjectives) वह शब्द हैं जो किसी संज्ञा या सर्वनाम से मिलकर उनके वाच्यों के गुणों का बोध कराते हैं।

उनको विशेषण इसलिए कहते हैं कि वे संज्ञा या सर्वनाम के अर्थों में कुछ विशेषता प्रकट करते हैं जैसे' काला घोड़ा।'

जिसके वह गुण बताते हैं उसको विशेष्य कहते हैं। ऊपर के उदाहरण में काला विशेषण और घोड़ा विशेष्यहै।

विशेषण दो प्रकार से प्रयोग में आते हैं प्रथम विशेष्य द्वारा (Attributively) 'जैसे अच्छा लड़का'। ऐसी दशा में विशेषण विशेष्य के पहिले रक्खा जाता है।

द्वितीय क्रिया द्वारा (Predicatively) जिसमें विशेषण क्रिया की सहायता से विशेष्य के गुण बताते हैं। जैसे 'वह लड़का अच्छा है,' ऐसी दशा में विशेषण विशेष्य के पश्चात् आते हैं और विधेय का एक भाग होते हैं।

हिन्दी में विशेषण के रूपों में लिङ्ग और वचन के कारण विकार हो जाता है परन्तु कारक के कारण नहीं होता। जैसे काला घोड़ा, काले घोड़े, काली घोड़ी, काली घोड़ियाँ। परन्तु 'काले घोड़ों का' और 'काले घोड़ों से'। इनके नियम नीचे लिखे जाते हैं—

(१) अकारान्त और उकारान्त शब्दों में कुछ भेद नहीं होता जैसे दुष्ट पुरुष, दुष्ट स्त्री, दुष्ट स्त्रियाँ, भीरु लड़का, भीरु लड़की या भीरु लड़कियाँ।

(२) आकारान्त शब्दों के आ को स्त्रीलिङ्ग के दोनों वचनों में ई और पुंलिङ्ग कर्त्ता के एकवचन को छोड़ शेष में ए हो जाता है। जैसे काला लड़का, काले लड़के, काले लड़के को, काले लड़कों से, काले लड़कों में, काली लड़की, काली लड़कियाँ।

विशेषण के बनाने की रीति—

संज्ञा के अन्त में वान, ई, मान, भर, भरा, रूपी, रहित, हीन, पूर्वक, युक्त, सम्बन्धी, री, वाला, हारा, या सा, जोड़ देते हैं। जैसे धनवान, धनी, मतिमान, गिलास भर, विषभरा, सिंहरूपी, गुणरहित, गुणहीन, विधिपूर्वक, विषयुक्त, धनसम्बन्धी, सुनहरी, गाड़ोवाला, लकड़िहारा, सूर्य्य सा इत्यादि।

विशेषण चार प्रकार के होते हैं।

(१) गुणबोधक (Adjectives of Quality) विशेषण से यह ज्ञात होता है कि अमुक वस्तु किस प्रकार की है जैसे चतुर मनुष्य।

(२) परिमाणबोधक (Adjectives of Quantity) जो यह बताते हैं कि अमुक वस्तु का क्या परिमाण है। जैसे थोड़ा भोजन।

(३) संख्याबोधक (Adjectives of Number) जिससे गिनती का बोध हो। जैसे चार मनुष्य।

(४) संकेतबोधक (Demonstrative Adjectives) जो किसी वस्तु का संकेत करें जैसे वह पुस्तक, यह क़लम।

अवस्था (Degrees of Comparison)

बहुत से गुणबोधक और कुछ परिमाण और संख्याबोधक शब्दों की तीन अवस्थायें होती हैं (१) स्वरूप अवस्था (Positive Degree) जैसे अच्छा लड़का, (२) आधिक्यबोधक अवस्था (Comparative Degree) जिसमें दो वस्तुओं के बीच तुलना होती है। जैसे राम से अच्छा, कृष्ण से बुरा। कभी कभी स्वरूप अवस्था के पहिले 'अधिक' या 'न्यून' लगा देते हैं जैसे 'वह मोहन से अधिक चतुर है,' (३) आतिशय्य बोधक अवस्था (Superlative Degree) जिसमें बहुत से वस्तुओं में तुलना होती है जैसे 'सबसे अच्छा'। इस प्रकार के शब्द 'सब से' लगा देने से बनते हैं।

संस्कृत में आधिक्यबोधक अवस्था में 'तर' और आतिशय्य बोधक अवस्था में 'तम' लगा देते हैं। जैसे प्रियतर, प्रियतम।

विशेषण के अर्थों में न्यूनता प्रकट करने के लिए 'सा' या 'सी' या 'कुछ' या 'थोड़ासा' लगा देते हैं। जैसे कालासा, थोड़ासा काला, कुछ काला।

विशेषण के अर्थों में आधिक्य दिखलाने के लिए 'अति', 'अत्यन्त,' 'अधिक,' 'बहुत', 'बहुत ही,' लगा देते हैं जैसे 'अति-भारी,' 'अत्यन्त,' 'कठिन', 'अधिक लाभदायक' 'बहुत बड़ा,' 'बहुत ही छोटा'।

'संख्याबोधक' (Adjectives of Number) विशेषण तीन प्रकार के होते हैं।

(१) निश्चय-बोधक (Definite) जैसे चार पुरुष, चैाथा मनुष्य। इन से निश्चित संख्या का बोध होता है।

(२) अनिश्चय-बोधक (Indefinite) जैसे कुछ आदमी, सब ग्राम, थोड़े से घोड़े। इनसे अनिश्चित संख्या का बोध होता है।

(३) प्रत्येक-बोधक (Distributive) जिस से प्रत्येक वस्तु का बोध हो। जैसे हर एक मनुष्य जायगा। प्रत्येक विद्यार्थी को पारितोषिक दिया जायगा।

कुछ विशेषण संज्ञा की भाँति भी प्रयोग में आते हैं और तब उनके रूप संज्ञा शब्दों के समान बनते हैं जैसे बुड्ढों का कहा मानो। बुरों से बचो।

विशेषणों की शब्द निरुक्ति करने में उनके प्रकार और विशेष्य देने चाहिएँ।

प्रश्न।

१—विशेषण किसे कहते हैं? २—विशेषण कितने प्रकार के हैं? ३—संख्या बोधक विशेषणों के प्रकार उदाहरण सहित लिखो। ४—विशेषणों के प्रयोग में लाने की विधि लिखो? ५—नीचे के वाक्यों में विशेषणों की शब्द निरुक्ति-लिखो।

बुरे आदमी का कोई मनुष्य मान नहीं करता। सच्ची बात कहने से कभी डरना न चाहिए। आठ बुरे आदमियों ने दोनों ग्रामों को लूट लिया और वहां के दरिद्र आदमियों को मारा।

पाठ ९

सर्वनाम (Pronouns.)

जो शब्द संज्ञावाचक शब्दों के स्थान पर प्रयोग में आते हैं उनको सर्वनाम (Pronouns) कहते हैं। जैसे 'यदि देवदत्त परीक्षा

में उत्तीर्ण होगा तो उसे पारितोषिक मिलेगा' यहाँ उसे सर्व-नाम है।

सर्वनाम शब्दों के लिङ्ग और वचन संज्ञा के लिङ्ग, वचन के समान होने चाहिएँ। कारक में आशय के अनुसार भेद हो जाता है।

सर्वनाम पाँच प्रकार के होते हैं (१) पुरुषवाचक (Personal), (२) निश्चयवाचक (Demonstrative), (३) अनिश्चयवाचक (Indefinite), (४) सम्बन्धवाचक (Relative), (५) प्रश्नवाचक (Interrogative)।

पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)।

पुरुषवाचक सर्वनाम वह है जिनसे उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष का ज्ञान हो।

पुरुष तीन हैं, उत्तम पुरुष (First Person) मध्यम पुरुष (Second Person) और अन्यपुरुष (Third Person)।

उत्तम पुरुष बोलनेवाले का वाचक है जैसे मैं, हम।

मध्यम पुरुष उसको कहते हैं जिससे बोला जाय जैसे तू, तुम, आप।

अन्य पुरुष वह है जिसके सम्बन्ध में बोलते हैं जैसे वह, वे।

उत्तम पुरुष 'मैं*' के रूप।

कर्त्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मुझसे	हमसे

* सर्वनाम में केवल सात कारक होते हैं; सम्बोधन नहीं होता।

सम्प्रदान	मुझे, मुझको, मेरे लिए अपने लिए	हमें, हमको, हमारे लिए, अपने लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध	मेरा, मेरी, मेरे, अपना, अपनी, अपने	हमारा, हमारे, हमारी अपना, अपनी, अपने
अधिकरण	मुझमें, मुझ पर	हममें, हम पर

मध्यम पुरुष 'तू' शब्द के रूप।

कर्त्ता	तू, तूने, तैंने	तुम, तुमने
कर्म	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
करण	तुझसे	तुमसे
सम्प्रदान	तुझे, तुझको, तेरे लिए, अपने लिए	तुम्हें, तुमको, तुम्हारे लिए, अपने लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे
सम्बन्ध	तेरा, तेरी, तेरे, अपना, नी, ने	तुम्हारा, तुम्हारी तुम्हारे, अपना, नी ने,
अधिकरण	तुझमें, तुझ पर	तुम में, तुम पर

प्रायः 'तू' नहीं बोला जाता। 'तू' के स्थान पर 'तुम' शब्द बहुवचन का एकवचन के लिए बोलते हैं। आदर के लिए 'तुम' के स्थान पर 'आप' बोलते हैं जिसके रूप नीचे लिखे हैं।

कर्त्ता	आप, आपने
कर्म	आपको
करण	आपसे
सम्प्रदान	आपको, के लिए, अपने लिए
अपादान	आपसे

सम्बन्ध — आपका, के, की, अपना, अपने, अपनी
अधिकरण — आप पर, आपमें

अन्यपुरुष 'वह' शब्द के रूप ।

कर्त्ता	वह, उसने	वे, उनने, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको, उन्हों को
करण	उससे	उनसे, उन्हों से
सम्प्रदान	उसको, उसे, उसके लिए, अपने लिए	उनको, उन्होंको, उनके लिए, उन्हों के लिए, अपने लिए
अपादान	उससे	उनसे, उन्होंसे
सम्बोधन	उसका, के, की अपना, ने, नी	उनका, के, की, उन्होंका, के, की, अपना, ने, नी
अधिकरण	उसमें, पर, पै	उनपर, पै, में उन्हों पर, पै, में

ऊपर लिखे शब्दों के बहुवचन के पीछे 'लोग' लगाकर भी बोलते हैं जैसे तुम लोग आप लोग, हम लोग, वे लोग आदि ।

नश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronouns).

निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronouns) वह हैं जो किसी वस्तु का निश्चय कराते हैं जैसे ये, वे, यह, वह, एक, दूसरा, दोनों ।

'यह' और 'ये' निकटवर्ती वस्तु के लिए आते हैं ।
'वह' और 'वे' दूरवर्ती वस्तु के लिए आते हैं ।
'वह' के रूप पुरुषवाचक 'वह' के सदृश होते हैं ।

'एक' के रूप अकारान्त पुंल्लिङ्ग संज्ञा के समान और 'दूसरा' आकारान्त पुंल्लिङ्ग संज्ञा के समान होते हैं। 'एक' और 'दूसरा' केवल एकवचन में आते हैं।

'दोनों' के रूप बहुवचन 'आकारान्त' संज्ञा के तुल्य होते हैं और यह बहुवचन में आता है।

'यह' के रूप नीचे लिखे जाते हैं।

कर्त्ता	यह, इसने	ये, इनने, इन्होंने
कर्म	यह, इसको, इसे	ये, इनको, इन्हों को, इन्हें
करण	इससे	इनसे, इन्हों से
सम्प्रदान	इसको, केलिए	इनको, के लिए इन्हों को, के लिए
अपादान	इससे	इनसे, इन्हों से
सम्बन्ध	इसका, के	इनका, के
अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronouns).

अनिश्चयवाचक (Indefinite Pronouns). वह शब्द हैं जिन से किसी निश्चित पदार्थ का ज्ञान नहीं हो सकता। ये तीन हैं 'सब', 'कुछ' और 'कोई'। 'कुछ' शब्द के रूप सदा एकसे रहते हैं।

'सब'* के रूप।

	सब, सबने, सभोंने
कर्म	सबको, सभों को
करण	सबसे, सभोंसे
सम्प्रदान	सबको, सभोंको, सब के लिए, सभों के लिए
अपादान	सबसे, सभों से

* 'सब' का एक वचन नहीं होता।

सम्बन्ध	सब का, के, की, सभों का, के, की	
अधिकरण	सबपर, पै, में, सभों पर, पै, में	

'कोई' शब्द के रूप।

कर्त्ता	कोई, किसीने	कोई, किन्हीने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से	किन्हीं से
सम्प्रदान	किसी को, के लिए	किन्ही को, के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से
सम्बन्ध	किसी का, के, की	किन्हीं का, के, की
अधिकरण	किसी पर, पै, में	किन्हीं पर, पै, में

सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronouns)

सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronouns). वह हैं जो कहे हुए संज्ञाशब्दों से सम्बन्ध रखते हैं। वे 'जो', 'जौन' और उनके परस्पर सम्बन्धी 'सो' और 'तौन' हैं।

जो (जौन) शब्द के रूप।

कर्त्ता	जो (जौन) जिसने	जो, जौन, जिन्होंने, जिनने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे	जिनसे
सम्प्रदान	जिसे, जिसको, के लिये	जिन्हें, जिनको, के लिए
अपादान	जिससे	जिनसे
सम्बन्ध	जिसका, के, की	जिनका, के, की
अधिकरण	जिसमें, पर, पै	जिनमें, पर, पै

सो (तौन) शब्द के रूप।

कर्त्ता	सो, (तौन) तिसने	सो, (तौन) तिनने, तिन्होंने
कर्म	तिसे, तिसको	तिन्हें, तिनको
करण	तिससे	तिन से
सम्प्रदान	तिसको, केलिए	तिनको, के लिए
अपादान	तिससे	तिनसे
सम्बन्ध	तिसका, के, की	तिनका, के, की
अधिकरण	तिसमें, पर, पै	तिनमें, पर, पै

प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronouns).

प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronouns). वह हैं जिनसे प्रश्न का बोध होता है। वे 'कौन' और 'क्या' हैं।

'कौन' प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक दोनों के लिए और 'क्या' केवल अप्राणिवाचक के लिए आता है।

'कौन' शब्द के रूप।

कर्त्ता	कौन, किसने	कौन, किनने, किन्होंने
कर्म	किसको, किसे	किनको, किन्हें
करण	किससे	किनसे
सम्प्रदान	किसको, केलिए, किसे	किनको, किनकेलिए किन्हें,
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका, के, की	किनका, के, की
अधिकरण	किसमें, पर, पै	किनपै, में, पर

'क्या' शब्द के रूप ।

कर्त्ता	क्या
कर्म	क्या
करण	काहे से
सम्प्रदान	काहे को, के लिए
अपादान	काहे से
सम्बन्ध	काहे का, के, की
अधिकरण	काहे में, पर

इन प्रसिद्ध सर्वनामों के अतिरिक्त एक और सर्वनाम है जिसको परस्परबोधक (Reciprocal Pronoun). कहते हैं उसमें दो शब्द हैं 'आपस' और 'एक दूसरा'।

"आपस" के रूप केवल सम्बन्ध और अधिकरण में होते हैं जैसे 'आपस का' और 'आपस में'।

'एक दूसरा' के रूप ।

कर्त्ता	एक दूसरे ने
कर्म	एक दूसरे को
करण	एक दूसरे से
सम्प्रदान	एक दूसरे के लिए, को
अपादान	एक दूसरे से
सम्बन्ध	एक दूसरे का, के, की
अधिकरण	एक दूसरे में, पर, पै

प्रश्न ।

१–सर्वनाम किसे कहते हैं ? २–सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं ? ३–पुरुषवाचक सर्वनामों के रूप लिखो। ४–अनिश्चयवाचक सर्वनाम कौन कौन से हैं ५–प्रश्न वाचक सर्वनाम और परस्परबोधक सर्वनाम की परिभाषा लिखो। ६–कौन, कोई, वह, जो के रूप लिखो।

सर्वनाम शब्दों की शब्दनिरुक्ति (Parsing of Pronouns.)

सर्वनाम शब्दों की शब्दनिरुक्ति करने में उनका प्रकार, पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक, और उनका अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताना चाहिए जैसे 'वह अपने घरको जाता है' में—

वह—पुरुष वाचक सर्वनाम—अन्य पुरुष, एकवचन, पुंल्लिङ्ग, कर्त्ता कारक, क्रिया 'जाता है,' का कर्त्ता है।

अपने—पुरुष वाचक सर्वनाम—अन्य पुरुष, एकवचन, पुंल्लिङ्ग, सम्बन्ध कारक 'घर' संज्ञा का भेदक है।

प्रश्न।

नीचे के वाक्यों में जो जो सर्वनाम हैं उनकी शब्द निरुक्ति लिखो।

क्या तुमने अपना पाठ याद कर लिया। आप किसके लड़के को पढ़ाते हैं। उनसे कौन कहता है कि वह सब काम हमारे ऊपर छोड़ दें। क्या तू नहीं जानता कि यह काम तुझ से ही कराया जायगा। जो जैसा करते हैं सो तैसा पाते हैं।

पाठ १०

क्रिया (Verb)।

(क्रिया (Verb) वह है जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय जैसे वह गाता है।)

वाक्य में क्रिया का होना अत्यावश्यक है। बिना क्रिया के कोई वाक्य नहीं हो सकता।

जिस शब्द के अन्त में 'ना' हो और उससे कोई व्यापार पाया जाय उसे क्रिया का सामान्यरूप (Infinitive) कहते हैं। जैसे

'आना' 'जाना' 'पीना' इत्यादि। परन्तु यदि व्यापार न पाया जाय तो वह क्रिया नहीं है जैसे गन्ना, कोना इत्यादि। 'ना' को सामान्य-रूप का चिन्ह (Sign of Infinitive) कहते हैं। सामान्यरूप से ही अन्य रूप बनते हैं।

'ना' को छोड़ जो शेष रह जाता है उसको धातु कहते हैं जैसे 'आ' 'जा' 'पी'।

क्रिया के भेद (Kinds of Verbs).

वह सोता है	वह पुस्तक को पढ़ता है
हम आते हैं	हम चित्र को देखते हैं
तुम रोते हो	तुम क़लम को लेते हो

ऊपर दो प्रकार के वाक्य दिये हुए हैं। बाईं ओर के वाक्यों में केवल क्रिया और कर्त्ता हैं, परन्तु दाईं ओर के वाक्यों में कर्त्ता क्रिया और कर्म तीन चीज़ें हैं। बाईं ओर के वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म नहीं ला सकते। हम नहीं कह सकते कि 'किसको सोता है' या 'किसको आता है' परन्तु हम कह सकते हैं कि 'वह किसको पढ़ता है' 'किसको देखता है' इत्यादि। जब तक कर्म न लगाया जाय तब तक दाईं ओर की क्रियाओं का व्यापार पूरा नहीं होता। यदि कहा जाय कि 'वह देखता है' या 'वह लेता है' और इन क्रियाओं का कर्म न बतलाया जाय तो सुननेवाले के मन को निश्चय नहीं होता। वह पूछता है कि "वह किसको देखता है" अथवा "किसको लेता है"। अब दो प्रकार की क्रियाएँ ऊपर बताई गईं हैं (एक वह जिनका फल केवल कर्त्ता ही तक रहता है उससे आगे नहीं जाता। ऐसी क्रियाओं को अकर्मक क्रिया (Intransitive verbs) कहते हैं। जैसे उठना, बैठना, चलना, फिरना इत्यादि।

जिनका फल कर्त्ता से चलकर ,कर्म पर पड़ता है उनको सकर्मक क्रिया (Transitive verbs) कहते हैं। जैसे खाना, लाना इत्यादि।

यदि सकर्मक क्रियायें सामान्य व्यापार की बोधक हों और उनसे किसी विशेष कर्म का आश्रय न पाया जाय तो ऐसी सकर्मक क्रियायें भी अकर्मक हो जाती हैं जैसे 'वह देखता है' अर्थात् 'वह देख सकता है' जिसका अर्थ यह है कि 'वह अन्धा नहीं है' 'देखना' सकर्मक है परन्तु यहाँ किसी विशेष कर्म का सूचक न हाेने के कारण अकर्मक हो गया।

कभी अकर्मक क्रिया के व्यापार को एक प्रकार का कर्म मान कर क्रिया के साथ जोड़ देते हैं। ऐसी दशा में अकर्मक क्रिया भी सकर्मक हो जाती है। जैसे 'वह एक चाल चला' 'तुम एक लड़ाई लड़े', 'हम एक दौड़ दौड़े'। यहाँ 'चाल', 'लड़ाई' और 'दौड़' क्रियाओं के व्यापार के वाचक हैं।

कुछ ऐसी भी क्रियायें हैं जो अकर्मक और सकर्मक दोनों हैं। जैसे 'खुजलाना', 'उसका शिर खुजलाता है' यहाँ 'खुजलाता है' अकर्मक क्रिया है। 'वह शिर को खुजलाता है' यहाँ 'खुजलाता है' सकर्मक क्रिया है।

कभी अकर्मक क्रिया से सकर्मक और सकर्मक से द्विकर्मक अथवा प्रेरणार्थक क्रिया बना लेते हैं। जैसे 'चलना' अकर्मक क्रिया है 'चलाना' सकर्मक हुई। चलवाना द्विकर्मक हो गई इनके बनाने की विधि नीचे लिखी जाती है।

(१) यदि अकर्मक धातु के अन्त में 'अ' हो तो 'अ' को 'आ' करके सामान्य रूप का चिन्ह जोड़ देने से सकर्मक और 'वाना' जोड़ देने से द्विकर्मक क्रिया हो जाती है जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
उठना	उठाना	उठवाना
उगना	उगाना	उगवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
बजना	बजाना	बजवाना
दबना	दबाना	दबवाना
मिलना	मिलाना	मिलवाना
पकना	पकाना	पकवाना
लगना	लगाना	लगवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
चमकना	चमकाना	चमकवाना
लटकना	लटकाना	लटकवाना
पिघलना	पिघलाना	पिघलवाना
जलना	जलाना	जलवाना
फिरना	फिराना	फिरवाना
चलना	चलाना	चलवाना
खिलना	खिलाना	खिलवाना

(२) यदि अकर्मक क्रिया के धातु में दो अक्षर हों और उनके मध्य में ए, ऐ, ओ, औ को छोड़ के कोई और दीर्घ स्वर हो तो उस दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर देते हैं यदि 'ए' या 'ओ' हो तो 'ए' को 'इ' और 'ओ' को 'उ' कर देते हैं। जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
जागना	जगाना	जगवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना
घूमना	घुमाना	घुमवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना

(३) यदि अकर्मक क्रिया के धातु में केवल एक अक्षर हो और उसके अन्त में दीर्घ स्वर या 'ओ' या 'ए' हो तो दीर्घ को ह्रस्व 'ओ' को 'उ', 'ए' को 'इ' करके 'ल' जोड़ कर नियम (१) के अनुसार सकर्मक आदि बना लेते हैं।

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
जीना	जिलाना	जिलवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना

(४) कुछ अनियम भी बनते हैं जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
पलना	पालना	पलवाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़वाना
बिकना	बेचना	बिकवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना

'आना' 'जाना' 'सकना' 'होना' इत्यादि के सकर्मक आदि नहीं बनते।

(५) सकर्मक क्रिया से द्विकर्मक और त्रिकर्मक बनाने के भी वही नियम हैं जो ऊपर दिये जा चुके हैं। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

सकर्मक	द्विकर्मक	त्रिकर्मक
पीना	पिलाना	पिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
देखना	दिखाना	दिखवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना

प्रश्न ।

१ क्रिया किसे कहते हैं। २ सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में क्या भेद है, उदाहरण देकर बताओ। ३ सकर्मक क्रिया कब अकर्मक हो जाती है। ४ अकर्मक कब सकर्मक हो जाती है। ५ द्विकर्मक और त्रिकर्मक क्रियाओं के अर्थ उदाहरण सहित लिखो। ६ अकर्मक से सकर्मक बनाने की विधि लिखो। ७ निम्न लिखित क्रियाओं में अकर्मक के सकर्मक और सकर्मक के द्विकर्मक बनाओ—

सोना, खोना, गाना, पाना, मिलना, टूटना, ढूंढ़ना, गिरना, देखना, करना, सीना, धोना, पालना, जागना, रोकना।

पाठ ११

क्रिया के अङ्ग (Inflections of Verbs).

क्रिया के पाँच अङ्ग होते हैं, वाच्य, काल, लिङ्ग, वचन, पुरुष।

वाच्य (Voice).

मैं किताब लिखता हूँ	किताब लिखी जाती है
वे आम खाते हैं	आम खाया जाता है
वाल्मीकि रामायाण लिखता है	रामायण लिखी जाती है

ऊपर दो प्रकार के वाक्य लिखे गये हैं। दोनों वाक्यों में सकर्मक क्रियाएँ आई हुई हैं। पहिले वाक्य समूह में कर्त्ता एक काम को करता है जैसे 'मैं लिखता हूँ'। 'वे खाते हैं' इत्यादि।

दूसरे वाक्यसमूह में पहिले वाक्यसमूह के कर्म ही कर्त्तारूप होगये हैं और वह प्रकट करते हैं कि वे स्वयं किसी कार्य्य को नहीं करते किन्तु इनपर किसी कार्य्य का फल गिरता है जैसे 'किताब लिखी जाती है' का यह अर्थ है कि 'लिखने' के कार्य्य का फल 'किताब' पर पड़ता है। पहिले समूह में 'किताब' को कर्म विभक्ति में रक्खा है। द्वितीय समूह में किताब को कर्त्ता विभक्ति में रखदिया है यद्यपि अर्थ कर्म के ही हैं।

ऊपर के वाक्यों को देखने से ज्ञात होगा कि क्रिया के दो भेद होगये॥ जिससे यह ज्ञात हो कि कर्त्ता विभक्ति में रक्खा हुआ शब्द क्रिया का करने वाला है या उसपर क्रिया का फल गिरता है उस अङ्ग को वाच्य (Voice) कहते हैं।

हिन्दी भाषा में वाच्य तीन होते हैं। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य (Active Voice) वह है जिससे ज्ञात हो कि कर्तृवाच्य विभक्ति में रक्खा हुआ शब्द क्रिया के करने वाले का वाचक है। जैसे 'देवदत्त ने दूध पिया' यहां देवदत्त जो कि कर्तृवाच्य विभक्ति में है क्रिया के करने वाले का वाचक है।

कर्मवाच्य (Passive Voice) वह है जिससे ज्ञात होता है कि कर्तृवाच्य विभक्ति में रक्खा हुआ शब्द कर्म का अर्थ देता है जैसे 'वस्त्र सिया जाता है' में 'वस्त्र' कर्तृवाच्य विभक्ति में है परन्तु कर्म का बोधक है। कर्मवाच्य केवल सकर्म्म क्रिया में होते हैं।

भाववाच्य (Impersonal) वह है जिसमें अकर्मक क्रिया के कर्मवाच्य क्रिया के समान रूप होकर कर्त्ता को 'करण विभक्ति' में रख देते हैं जैसे 'मुझ से जाया नहीं जाता' 'उनसे सोया नहीं जाता'।

भाववाच्य प्रायः निषेध में ही आते हैं।

भाववाच्य और कर्मवाच्य के बनाने की यह रीति है कि मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल के रूप में ले आओ उसके पीछे उसमें 'जाना' क्रिया के काल, पुरुष, वचन, लिङ्ग के अनुसार रूप जोड़ दो। यदि मुख्य क्रिया सकर्मक है तो उस प्रकार बनी हुई क्रिया कर्मवाच्य होगई और यदि अकर्मक हुई तो भाववाच्य होगी। जो शब्द कर्तृवाच्य में कर्म विभक्ति में हो वह कर्मवाच्य

में कर्तृवाच्य * विभक्ति में हो जाता है और जो शब्द कर्तृवाच्य में कर्त्ता विभक्ति में हो वह कर्मवाच्य और भाववाच्य में करण विभक्ति में होजाता है। जैसे 'व्यासजी वेद को पढ़ते हैं' का कर्मवाच्य बनाना है यहां 'व्यासजी' कर्तृवाच्य विभक्ति में है उसको करण विभक्ति में पलटा तो 'व्यासजी से' होगया 'वेद को' कर्म विभक्ति में है उसको कर्तृवाच्य विभक्ति में पलटा तो केवल 'वेद' रहगया। मुख्य क्रिया पढ़ना है इसका सामान्य भूतकाल 'पढ़ा' हुआ। 'पढ़ते हैं' वर्तमान काल में है। इसलिए 'जाना' क्रिया का वर्त्तमान 'जाता है' जोड़ दिया। तो पूरा वाक्य 'व्यासजी से वेद पढ़ा जाता है' हो गया।

इसीप्रकार 'राम जाता है' का भाववाच्य "रामसे जाया जाता है" होगया।

प्रश्न।

नीचे के वाक्यों को कर्मवाच्य और भाववाच्यक्रिया द्वारा प्रकट करो। गाय दूध देती है। बालक संध्या करता है। अच्छे पुरुष सत्य बोलते हैं। विद्यार्थी पुस्तक को पढ़ता है। मैं नहीं सोता। देवदत्त कलकत्ते जाता है। मोहन वृक्ष को काटता है। सोमदेव नहीं गाता। क्या तुम पत्र लिखदोगे। हम ने कोई अपराध नहीं किया। यह लकड़ी उस बालक ने तोड़ी थी। यह खेत विश्वमित्र ने बोया होग।

२ नीचे के वाक्यों को कर्तृवाच्य क्रिया द्वारा प्रकाशित करो। क्या तुमसे इतना भी नहीं पढ़ा जाता। रावण राम से मारा गया। क़लम बालक से बनाई गई। उनसे वस्त्र पहिने जाते हैं। मुझसे यहाँ सोया न जायगा। सत्य प्रकाश से यह पुस्तक पढ़ी जायगी। रामप्रसाद से दवात फैलाई जायगी।

---

* यहां यह नहीं समझना चाहिए कि कर्म कर्त्ता होगया और कर्त्ता करण होगया। अर्थ वही रहे। केवल विभक्ति बदल गई। अध्यापक को उचित है कि विद्यार्थी को यह बात भली प्रकर समझा दें। 'कर्ता' और कर्तृविभक्ति में भेद है कर्तृविभक्ति केवल शब्दों से सम्बन्ध रखती है और कर्त्ता के चिन्ह को जोड़ देने से बन जाती है। परन्तु कर्त्ता किसी वास्तविक पदार्थ को कहते हैं जो वस्तुतः किसी कार्य्य को करे।

१२ पाठ ।

काल (Tense)

वह घर गया	वह घर जाता है	वह घर जायगा
मैंने आम खाया	मैं आम खाता हूं	मैं आम खाऊँगा
सोताने पत्र पढ़ा	सीता पत्र पढ़ती है	सीता पत्र पढ़ेगी

ऊपर लिखे तीनवाक्य समूहों में पहिले समूह की क्रियाओं से ज्ञात होता है कि काम को किये हुए कुछ समय बीत गया। दूसरे से यह ज्ञात होता है कि काम अभी होरहा है। तीसरे से यह प्रकाशित होता है कि काम भविष्यत् काल में होगा।

क्रिया के जिस अङ्ग से काम के होने का समय पाया जाय उसे काल (Tense) कहते हैं।

काल तीन हैं। भूत (Past Tense), वर्त्तमान (Present Tense) और भविष्यत् (Future Tense).

भूतकाल (Past Tense)

भूतकाल छः प्रकार का होता है। सामान्य भूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत, सन्दिग्धभूत, हेतुहेतुमद्भूत।

वह गया। लड़के उठे। लड़कियों ने गाया।

उपर्युक्त वाक्यों के भूतकालिक क्रिया तो हैं परन्तु उनसे यह बोध नहीं होता कि काम को हुए कितनी देर हुई। इसको सामान्य-भूत (Past Indefinite) कहते हैं।

सामान्यभूतकालिक क्रिया के बनाने की रीति यह है कि यदि धातु के अन्त में 'अ' हो तो उसके स्थान में 'आ' कर दो जैसे 'पढ़ना' से 'पढ़ा', 'लिखना' से 'लिखा', 'ढूंढ़ना' से 'ढूंढा'। यदि धातु के अन्त में 'आ' या 'ओ' हो तो उसमें 'या' जोड़ दो। जैसे

'खाना' से 'खाया', 'रोना से रोया'। यदि धातु के अन्त में 'ई' या 'ए' हो तो इनके स्थान में 'इया' जोड़ दो जैसे 'पीना' से 'पिया'। 'देना' से 'दिया'। यदि धातु के अन्त में 'ऊ' हो तो 'ऊ' को 'उ' करके 'आ' जोड़ दो जैसे 'छूना' से 'छुआ'।

कुछ अनियम भी बनते हैं जैसे—
जाना से गया
होना से 'हुआ' या 'था'
करना से किया

उसने खाना खाया है। वह आ गया है। मैंने पानी पिया है। उपर के वाक्यों की क्रियाओं से ज्ञात होता है कि काम भूत काल में आरम्भ होकर अभी समाप्त हुआ है। ऐसी क्रिया को आसन्नभूत (Present Perfect) कहते हैं।

इसके बनाने की यह रीति है कि सामान्यभूत में उत्तम पुरुष के एकवचन में 'हूं' बहुवचन में 'हैं' मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के एक वचन में 'है' और बहुवचन में 'हैं' लगा देते हैं। जैसे मैं आया हूं। तू आया है। वह आया है। हम आये हैं। तुम आये हो। वे आये हैं। यदि कर्त्ता के साथ उसका चिन्ह 'ने' आवे तो केवल 'है' ही लगता है जैसे—

उसने किया है। हमने किया है। मैंने किया है इत्यादि।

पूर्णभूत (Past Perfect)

उसने पानी पिया था। राम ने भोजन किया था। तूने पत्र लिखा था। इन वाक्यों से प्रकट होता है कि काम को हुए बहुत समय व्यतीत हो गया॥ जिससे भूत काल में दूरी पाई जाय उसे पूर्णभूत (Past Perfect) कहते हैं। इसके बनाने की यह रीति है कि सामान्य भूत में नीचे लिखे शब्द लगा देते हैं।

	एकवचन		बहुवचन	
	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
उत्तम पुरुष	था	थी	थे	थीं
मध्यम ,,	था	थी	थे	थीं
अन्य ,,	था	थी	थे	थीं

जैसे, मैं आया था, आई थी — हम आये थे, आई थीं
तू आया था, आई थी — तुम आये थे, आई थीं
वह आया था, आई थी — वे आये थे, आई थीं।

अपूर्णभूत (Past Imperfect)

वे खाना खाते थे। तुम जाते थे। हम दौड़ते थे।

ऊपर की क्रियाओं से प्रकट होता है कि यद्यपि कार्य्य भूतकाल में हुआ परन्तु समाप्त नहीं हुआ। 'खाते थे' का अर्थ यह है कि खाना समाप्त नहीं हुआ। ऐसी क्रिया को अपूर्णभूत (Past Imperfect) कहते हैं।

इसके बनाने की यह रीति है कि धातु में 'ता था' 'ती थी', 'ते थे', 'ती थीं', या 'रहा था' 'रही थी', 'रहेथे', 'रही थीं' लगा देते हैं। जैसे वह सोता था या सो रहा था। वे सोते थे या सो रहे थे। हम सोती थीं या सो रही थीं इत्यादि।

सन्दिग्धभूत (Doubtful Past)

उसने पत्र लिखा होगा। हमने पुस्तक पढ़ी होगी।

यहां 'लिखा होगा' और 'पढ़ी होगी' से भूतकाल तो पाया जाता है परन्तु क्रिया के होने में सन्देह है। इसको सन्दिग्धभूत (Doubtful Past) कहते हैं।

इसके बनाने की यह रीति है कि सामान्यभूत के आगे 'होगा' 'होगी' 'होंगे', 'होंगी' लगा देते हैं।

हेतुहेतुमद्भूत (Conditional Past)

वे आते तो मुझे पढ़ाते। वर्षा होती तो अन्न होता।

ऊपर के वाक्यों से प्रकट होता है कि कार्य्य भूतकाल में होने वाला तो था परन्तु किसी कारण से हुआ नहीं। ऐसी क्रिया को हेतुहेतुमद्भूत (Conditional Past) कहते हैं।

इसके बनाने की यह रीति है कि धातु में ता, ती, ते, तीं, लगा देते हैं।

मैं आता—आती। हम आते या आतीं

वर्त्तमान काल (Present Tense)

वर्त्तमानकालिक क्रिया के दो भेद हैं। सामान्य वर्त्तमान, सन्दिग्ध वर्त्तमान।

वह जाता है	वह जाता होगा
तुम खाते हो	तुम खाते होगे
राम रहता है	राम रहता होगा

उपर के दोनों वाक्यसमूहों से वर्त्तमान काल का बोध होता है परन्तु पहले समूह में सामान्यता पाई जाती है और दूसरे समूह का क्रियाओं के होने में सन्देह है।

सामान्य वर्त्तमान कालिक (Indefinite Present Tense)

वह क्रिया है जिससे काम का वर्त्तमान में होना पाया जाय। इसके बनाने की रीति यह है कि हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे 'हूं' 'है' या 'हैं' लगा देते हैं जैसे 'वह जाता है' 'वे जाते हैं'।

सन्दिग्ध वर्त्तमानकालिक (Doubtful Present Tense)

वह क्रिया है जिसके होने में सन्देह हो। सम्भव है कि काम हो, सम्भव है कि न हो।

इसके बनाने की रीति यह है कि हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे 'होगा' 'होगी' 'होंगे' 'होंगी' लगादेते हैं जैसे वह जाता होगा। हम जाते होंगे। वह जाती होगी। वे जाती होंगी।

भविष्यत्काल (Future Tense).

यह दो प्रकार का होता है, एक सामान्यभविष्यत् दूसरा संभाव्यभविष्यत्।

मैं करूं	मैं करूंगा
तू लड़े	तू लड़ेगा
वह खावे	वह खायगा

ऊपर की क्रियाओं से प्रकट होता है कि कार्य्य आरम्भ नहीं हुआ। आनेवाले समय में होगा परन्तु पहिले वाक्यसमूह से यह ज्ञात होता है कि कार्य्य करने की इच्छा मात्र है, हो या न हो। इसको संभाव्यभविष्यत् (Conditional Future) कहते हैं।

दूसरे वाक्यसमूह से कार्य्य की सामान्यता पाई जाती है। इसको सामान्यभविष्यत् (Indefinite Future Tense) कहते हैं।

संभाव्यभविष्यत् के बनाने की रीति यह है कि धातु के अन्त में बहुवचन में 'तुम' के साथ 'ओ' अन्यथा 'एं' या 'यें' और एकवचन में 'मैं' के साथ 'ऊं', अन्यथा 'ए' या 'ये' लगा देते हैं जैसे—

मैं खाऊं	हम खायें	मैं बैठूं	हम बैठें
तू खाये	तुम खाओ	तू बैठे	तुम बैठो
वह खाये	वे खायें	वह बैठे	वह बैठें

संभाव्यभविष्यत् के आगे 'गा', 'गी', 'गे', 'गीं' लगा देने से सामान्यभविष्यत् बन जाता है।

मैं खाऊँगा	हम खायेंगे
तू खायेगा	तुम खाओगे
वह खायेगा	वे खायेंगे

आज्ञा (Imperative).

(ऊपर की क्रियाओं के अतिरिक्त एक और क्रिया है जिसमें किसी प्रकार का हुक्म, या बोलनेवाले को इच्छा पाई जाती है। इसको आज्ञा (Imperative) कहते हैं। यह केवल मध्यम पुरुष में आती है।)

एक वचन का रूप धातु रूप के समान होता है। जैसे बैठ, जा, आ। एकवचन में 'ओ' लगा देने से बहुवचन हो जाता है जैसे बैठो, जाओ, आओ।

आदर के लिए 'इये' या 'इए' लगा देते हैं। जैसे बैठिये, जाइए।

यदि कार्य्य दूरदेश या दूरकाल में होना हो तो 'इयो' या 'इओ' लगा देते हैं जैसे 'बैठियो' 'जाइयो'।

'न' या 'मत' लगा देने से निषेधबोधक आज्ञा हो जाती है जैसे न बैठो, मत खाओ।

पूर्वकालिकक्रिया (Perfect Participle).

(इनके अतिरिक्त एक और क्रिया है जिससे एक काम का हो चुकना पाया जाय। इसको पूर्वकालिक क्रिया (Perfect Participle) कहते हैं।)

(यह अकेली प्रयोग में नहीं आती, दूसरी क्रियाओं के साथ आती है। धातु के अन्त में 'कर' या 'करके' लगा देने से यह बन जाती है। जैसे वह पढ़ कर चला गया, वह काम करके जायगा, इत्यादि।)

प्रश्न।

१—काल किसे कहते हैं। २—काल के कितने भेद हैं, परिभाषा सहित लिखो। ३—भूत क्रिया कितने प्रकार की है। ४—सामान्यभूत, आसन्नभूत और अपूर्ण भूत क्रिया किसे कहते हैं। उनके बनाने की रीति उदाहरणसहित लिखो।

५ वर्तमान और भविष्यत् काल के भेद लिखो। ६ आज्ञा किसे कहते हैं। ७ पूर्वकालिक क्रिया किसे कहते हैं और वह कैसे बनती है। ८ नीचे के वाक्यों में क्रियाओं के भेद बताओ।

तुम कल कहाँ गये थे। मैं अभी आता हूं। तीन स्त्रियां कुएँ पर पानी भरा करती हैं। शराब बड़ी बुरी चीज़ है इसे कभी मत पीना। गाय का दूध मीठा होता है। बालक चिल्ला रहा है। कौन कहता है कि मैं कल जाऊँगा। शायद वह वहाँ जाये। उस ने किताब पढ़ली होगी। वे पत्र लिखते होंगे। वे मेरे पास आते तो इतना दुःख न पाते। चाहे काम करो चाहे बैठे रहो म तुम से कुछ न कहूंगा। अपने माता पिता की सेवा किया करो। गुरु जी की सेवा करना चाहिए। वह बुरा लड़का है क्योंकि वह सीग्रेट पीता है।

पाठ १३

लिङ्ग, वचन, पुरुष (Gender, Number, Person).

संज्ञा की भाँति क्रिया में भी लिङ्ग, वचन और पुरुष होते हैं। लिङ्ग दो हैं। स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग। जैसे 'आती है', 'आता है'। वचन दो हैं एकवचन, बहुवचन जैसे 'आता है', 'आते हैं'। पुरुष तीन हैं, उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, अन्यपुरुष जैसे 'मैं आता हूं', 'तू आता है', 'वह आता है'।

पाठ १४

संयुक्तक्रिया (Compound Verbs).

संयुक्तक्रिया (Compound Verbs) **उनको कहते हैं जो कई भिन्नार्थक क्रियाओं से बन कर मुख्य क्रिया के अर्थों में कुछ विशेषता कर दें। पहिली क्रिया को मुख्य क्रिया** (Principal Verb) **कहते हैं। अन्य क्रियाओं को सहायक क्रिया कहते हैं** (Auxiliary)**। 'देख चुका' में 'देख' मुख्य क्रिया है 'चुका' सहायक क्रिया। सहायक क्रियायें प्रायः मुख्य क्रिया के धातु में लगती हैं। सहायक क्रिया के ८ भेद हैं।**

(१) निश्चयबोधक—जैसे 'आना', 'जाना', 'उठना', 'बैठना', 'लेना,' 'देना,' 'डालना,' 'रखना,' 'दिखाना'। वह कर आया है। मैं चला गया था। वह बोल उठा। वह जा बैठा। मैंने देख लिया। तुम काम कर दो। तुम काम कर डालो। तुमने काम कर रक्खा है। उसने काम कर दिखाया।

(२) परतन्त्रताबोधक जैसे 'पड़ना'। मुझे पाँच पृष्ठ प्रति दिन लिखना पड़ता है।

(३) शक्तिबोधक—सकना' जैसे मैं तुमको न देख सका।

(४) समाप्तिबोधक—'चुका' जैसे 'वह खा चुका'।

(५) इच्छाबाधेक—'चाहना' जैसे मैं वहाँ जाना चाहता हूँ।

(६) आरम्भबोधक—'लगना' जैसे मैं वहाँ जाने लगा हूँ।

(७) नित्यताबोधक-'करना' जैसे वह यह काम किया करता है।

(८) अवकाशबाधक—'पाना' जैसे वह वहाँ जाने नहीं पाता।

पाठ १५

क्रियाओं के रूप (Conjugation of Verbs).

अब यहाँ क्रियाओं के रूप सब लिङ्ग, वचन आदि में लिखे जाते हैं।

सकर्मक क्रिया 'देखना'।

कर्तृ वाच्य।

सामान्यभूत।

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैंने देखा	हमने देखा

मध्यमपुरुष	तूने देखा	तुमने देखा
अन्यपुरुष	उसने देखा	उन्होंने देखा

आसन्नभूत ।

उ०	मैंने देखा है	हमने देखा है
म०	तूने देखा है	तुमने देखा है
अ०	उसने देखा है	उन्होंने देखा है

पूर्णभूत ।

उ०	मैंने देखा था	हमने देखा था
म०	तूने देखा था	तुमने देखा था
अ०	उसने देखा था	उन्होंने देखा था

अपूर्णभूत ।

उ०	मैं देखती थी—मैं देखता था मैं देख रही थी—मैं देख रहा था	हम देखती थीं—हम देखते थे हम देख रही थीं—हम देख रहे थे
म०	तू देखती थी—तू देखता था तू देख रही थी—तू देख रहा था	तुम देखती थीं—तुम देखते थे तुम देख रही थीं—तुम देख रहे थे
अ०	वह देखती थी—वह देखता था वहदेखरही थी—वहदेखरहा था	वे देखती थीं—वे देखते थे वे देख रही थीं—वे देख रहे थे

सन्दिग्धभूत ।

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैंने देखा होगा	हमने देखा होगा
म०	तूने देखा होगा	तुमने देखा होगा
अ०	उसने देखा होगा	उन्होंने देखा होगा

हेतुहेतुमद्भूत ।

उ०	मैं देखती, देखता	हम देखतीं, देखते
म०	तू देखती, देखता	तुम देखतीं, देखते
अ०	वह देखती, देखता	वे देखतीं, देखते

सामान्य वर्त्तमान ।

	मैं देखती हूं, देखता हूं	हम देखती हैं, देखते हैं
म०	तू देखती है, देखता है	तुम देखती हो, देखते हो
अ०	वह देखती है, देखता है	वे देखती हैं, देखते हैं

सन्दिग्ध वर्त्तमान ।

उ०	मैं देखती हूंगी, देखताहूंगा-	हम देखती होंगी, देखते होंगे
म०	तू देखती होगी, देखता होगा-	तुम देखती होंगी, देखते होगे
अ०	वह देखती होगी, देखताहोगा-	वे देखती होंगी, देखते होंगे

सम्भाव्यभविष्यत् ।

उ०	मैं देखूँ	हम देखें
म०	तू देखे	तुम देखो
अ०	वह देखे	वे देखें

सामान्यभविष्यत् ।

उ०	मैं देखूंगी, गा	हम देखेंगी, गे
म०	तू देखेगी, गा	तुम देखोगी, गे
अ०	वह देखेगी, गा	वे देखेंगी, गे

आज्ञा ।

म०	तू देख	तुम देखो

पूर्वकालिक ।

देखकर, देखके

कर्मवाच्य ।

सामान्यभूत ।

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखी गई,	देखा गया	हम देखीगईं,	देखे गये
म०	तू देखी गई,	देखा गया	तुम देखी गईं,	देखे गये
अ०	वह देखी गई,	देखा गया	वे देखी गईं,	देखे गये

आसन्नभूत ।

उ०	मैं देखीगई हूं,	देखा गया हूं	हम देखी गईं हैं,	देखे गये हैं
म०	तू देखी गई है,	देखा गया है	तुम देखी गईं हो,	देखे गये हो
अ०	वह देखीगई है,	देखागया है,	वे देखी गईं हैं	देखे गये हैं

पूर्णभूत ।

उ०	मैंदेखी गई थी,	देखागया था	हम देखी गईं थीं,	देखे गये थे
म०	तू देखीगई थी,	देखागया था	तुम देखी गई थीं,	देखे गये थे
अ०	वह देखीगई थी,	देखागया था	वे देखी गई थीं,	देखे गये थे

अपूर्णभूत ।

उ०	मैं देखी जातीथी,	देखाजाताथा	हम देखी जाती थीं,	देखे जाते थे
म०	तूदेखी जातीथी,	देखाजाता था	तुम देखी जाती थीं,	देखे जाते थे
अ०	वहदेखीजातीथी,	देखाजाताथा	वे देखी जाती थीं,	देखे जाते थे

सन्दिग्धभूत ।

उ०	मैं देखीगई हूंगी,	देखा गया हूंगा	हम देखी गई होंगी,	देखे गये होंगे
म०	तू देखीगई होगी,	देखागया होगा	तुम देखी गई होंगी,	देखे गये होंगे
अ०	वहदेखीगईहोगी,	देखागयाहोगा	वे देखी गई होंगी,	देखे गये होंगे

हेतुहेतुमद्भूत ।

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखी जाती,	देखा जाता	हम देखी जातीं,	देखे जाते
म०	तू देखी जाती,	देखा जाता	तुम देखी जातीं,	देखे जाते
अ०	वह देखी जाती,	देखा जाता	वे देखी जातीं,	देखे जाते

सामान्य वर्त्तमान ।

उ०	मैं देखी जाती हूं,	देखा जाता हूं	हम देखी जाती हैं,	देखे जाते हैं
म०	तू देखी जाती है,	देखा जाता है	तुम देखी जाती हो,	देखे जाते हो
अ०	वह देखी जाती है,	देखाजाता है	वे देखी जाती हैं,	देखे जाते हैं

सन्दिग्ध वर्त्तमान ।

उ०	मैं देखी जाती हूंगी, देखा जाता हूंगा	हम देखी जाती होंगी हम देखे जाते होंगे
म०	तू देखी जाती होगी, देखा जाता होगा	तुम देखी जाती होगी तुम देखे जाते होगे
अ०	वह देखी जाती होगी, देखा जाता होगा	वे देखी जाती होंगी वे देखे जाते होंगे

सम्भाव्य भविष्यत् ।

उ०	मैं देखी जाऊं,	देखा जाऊं	हम देखी जाँय,	देखे जायँ
म०	तू देखी जाय,	देखा जाय	तुम देखी जाओ,	देखे जाओ
अ०	वह देखी जाय,	देखा जाय	वे देखी जायँ,	देखे जायँ

सामान्य भविष्यत्

	स्त्री०	पुँ०	स्त्री०	पुँ०
उ०	मैं देखी जाऊँगी,	देखा जाऊंगा	हम देखी जायँगी,	देखे जायँगे
म०	तू देखी जायगी,	देखा जायगा	तुम देखी जाओगी,	देखे जाओगे
अ०	वह देखी जायगी,	देखा जायगा	वे देखी जायंगी,	देखे जायँगे

आज्ञा

म० तू देखी जा, तू देखा जा   तुम देखी जाओ, देखे जाओ

पूर्वकालिक

देखा जाकर, देखा जाके

भाववाच्य

'आना' क्रिया

सामान्यभूत

उ०	मुझ से आया गया	हम से आया गया
म०	तुझ से ,, ,,	तुम से ,, ,,
अ०	उस से ,, ,,	उन से ,, ,,

आसन्नभूत

मुझ से, तुझ से, उस से } आया गया है   हम से, तुम से, उन से } आया गया है.

पूर्णभूत

मुझ से, तुझ से, उस से } आया गया था   हम से, तुम से, उन से } आया गया था

अपूर्णभूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आयाजाता था।

सन्दिग्धभूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया गया होगा

हेतुहेतुमद्भूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जाता

सामान्यवर्त्तमान

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जाता है

सन्दिग्धवर्त्तमान

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया जाता होगा

सम्भाव्यभविष्यत्

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जावे

सामान्यभविष्यत्

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आयाजावेगा

आज्ञा

तुझसे, या तुमसे, आजाजाय

पूर्वकालिक

आया जाकर

पाठ १६

क्रियाओं की शब्दनिरुक्ति

क्रियाओं की शब्दनिरुक्ति करने में (१) प्रकार, (२) वाच्य, (३) काल, (४) पुरुष, (५) लिङ्ग, (६) वचन, (७)*कर्त्ता, का देना आवश्यक है। "मैं पानी पीता हूँ" में

पीता हूँ सकर्मक, कर्तृवाच्य, सामान्यवर्त्तमान, उत्तमपुरुष पुल्लिङ्ग, एकवचन, (मैं) इसका कर्त्ता है।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाओं की शब्दनिरुक्ति करो।

तुम से यह दुःख देखा न जायगा। बालक खेल रहा है। कव्वे काँव काँव करते हैं। पानी तालाब में भरा है। उसने क़लम देखी होगी। आज एक सिपाही बरख़ास्त कर दिया गया। तुम वहाँ जाओ और वह यहाँ आवे। रामने कई घोड़े ख़रीदे। सीतलदीन से कहो कि अपना काम समय पर किया करे। आप जाने आपका काम जाने।

पाठ १७

क्रियाविशेषण (Adverbs)

जो शब्द किसी क्रिया के व्यापार में कुछ विशेषता प्रकाशित करें उसे क्रियाविशेषण (Adverb) कहते हैं। यह कई प्रकार का है कुछ प्रसिद्ध क्रियाविशेषण नीचे लिखे जाते हैं।

(१) रीति वाचक (Adverbs of Manner) जिससे क्रिया की रीति ज्ञात हो। जैसे ज्यों, त्यों, यों, क्यों, ऐसे, वैसे, जैसे, सचमुच, झूठमूठ, ठीक, यथार्थ, वृथा, तथापि, इत्यादि।

---

* कर्मवाच्य के 'कर्त्ता' बताने में वह शब्द बताना चाहिए जो 'कर्त्ता' विभक्ति, में है।

(२) काल वाचक (Adverbs of Time) जिससे क्रिया का काल अर्थात् समय ज्ञात हो जैसे जब, अब, कब, पहिले, पीछे, कब तक, सदा कभी, शीघ्र, देर से, आज, कल, प्रतिदिन, तड़के, प्रायः बहुधा, तुरन्त, बारबार इत्यादि ।

(३) स्थानवाचक (Adverbs of Place) जिससे क्रिया के व्यापार का स्थान पाया जाय जैसे, यहां, वहां, कहां, जहां, ऊपर नीचे, भीतर, बाहर, पास, दूर, समीप इत्यादि ।

(४) परिमाणवाचक (Adverbs of Quantity) जिससे परिमाण का बोध हो जैसे इतना, उतना, जितना, कितना, अति, कुछ थोड़ा सा इत्यादि ।

(५) स्वीकार और निषेधवाचक (Adverbs of Belief and Disbelief) जैसे अवश्य, तो, निस्सन्देह, नहीं, मत इत्यादि

(६) हेतुवाचक (Adverbs of Cause) जैसे इसलिए, इस कारण, अतएव इत्यादि ।

(७) प्रश्नवाचक (Interrogative Adverbs) जैसे क्यों कहां, कब इत्यादि ।

क्रियाविशेषण की शब्दनिरुक्ति करने में इसका प्रकार और उस क्रिया को बताना चाहिए जिसका यह विशेषण है। जैसे 'वह झट चला गया' में 'झट' क्रियाविशेषण कालवाचक, चला गया का विशेषण ।

प्रश्न

१ क्रिया विशेषण की परिभाषा लिखो । २ इनके प्रकार उदाहरण सहित लिखो । ३ नीचे लिखे वाक्यों में जो जो क्रियाविशेषण हों उनकी शब्द-निरुक्ति करो ।

तुम वहाँ कब जाओगे। मैं इस काम को क्यों न करूं। थोड़ी देर ठहर जाओ तब जाना। वे वहाँ बहुत जाते हैं। वह बड़ी चतुराई से कार्य्य करता है। देवदत्त अच्छा लिखता है। जिसके हां जाओ उसीके हां भोजन करना। तुम अवश्य घर जाओ।

पाठ १८

सम्बन्धवाचक शब्द (Prepositions)

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम से मिलकर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं उनको सम्बन्धवाचक (Preposition) कहते हैं। जैसे रहित, सहित, समेत, आगे पीछे बाहर, भीतर इत्यादि।

इन शब्दों की शब्द निरुक्ति करने में उस संज्ञा या सर्वनाम को भी बताना उचित है जिसके वह साथ रहता है 'जैसे मैं रामसहित घर आया' में सहित सम्बन्धवाचक, राम का सम्बन्धवाचक है।

प्रश्न।

नीचे के वाक्यों में जो जो सम्बन्धवाचक शब्द हैं उनकी शब्दनिरुक्ति लिखो।

मैं तुम्हारे सन्मुख कुछ नहीं कह सकता जब राम उसके पास गया तो वह कुर्सी के ऊपर बैठा था। गङ्गा बनारस के भीतर होकर गई है। आपके सदृश जगत् में कोई नहीं है।

नोट—बहुत से शब्द क्रियाविशेषण और सम्बन्धवाचक दोनों हैं। वे आशय से पहिचाने जाते हैं जैसे 'मैं **पीछे** आया' में **पीछे** क्रियाविशेषण है। परन्तु 'वह उसके **पीछे** आरहा है' में **पीछे** सम्बन्धवाचक शब्द है।

पाठ १९

समुच्चयबोधक (Conjunctions)

जो शब्द दो पदों, वाक्यों, या वाक्यांशों, को जोड़ते हैं वे समुचयबोधक (Conjunctions) कहलाते हैं जैसे राम और लक्ष्मण वन को गये।

इनके दो भेद हैं।

(१) संयोजक (Conjunctive words) जो जोड़ते हैं जैसे और, यथा, तथा, यदि, जो, कि, तो इत्यादि

(२) विभाजक (Disjunctive words) जो दो पद, शब्द, या वाक्यों का विभाग करते हैं। वे ये हैं, या, वा, अथवा, परन्तु, किन्तु, पर, ना, वरन, वल्कि इत्यादि।

यह शब्द केवल समान शब्दों को जाड़ते हैं। संज्ञा को संज्ञा या सर्वनाम से, विशेषण को विशेषण से, क्रिया को क्रिया से, वाक्य को वाक्य से।

हम नहीं कह सकते कि 'राम और आता है', 'राम और लक्ष्मण' कह सकते हैं।

ऐसे शब्दों की शब्दनिरुक्ति करने में उन शब्दों को भी बताना चाहिए जिनको वे जोड़ते हैं जैसे, 'राम और लक्ष्मण आये' में और समुच्चयवाचक, राम और लक्ष्मण को जोड़ता है।

पाठ २०

विस्मयादिबोधक शब्द (Interjections)

विस्मयादिबोधक वह शब्द हैं जिनसे विस्मय आदि भावों का बोध हो। ये कई प्रकार के हैं।

(१) हर्षबोधक—जैसे धन्य धन्य·

(२) क्लेशबोधक—जैसे हाय हाय

(३) लज्जाबोधक—धिक् धिक् छी छी

(४) आश्चर्य्यबोधक—जैसे ओहो।

प्रश्न।

निम्नलिखित वाक्यों में प्रत्येक की शब्दनिरुक्ति लिखो।

मोहन मर ही चला था। मुझे संसार में दुःख ही भोगना पड़ा। यह अशान्ति किसके शिर मंढी जाय। सदाचारी रहना मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य है। चन्द्रावती फूलों से खेल रही है। धिक् धिक् ऐसा काम करते हो। मेरे पास एक भी पैसा नहीं है। बच्चों को बुरे कर्म करने पर ताड़ना चाहिये। पराधीन सपने सुख नाहीं। सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। खेती करना अत्युत्तम कार्य्य है। पशुओं को कभी न सताओ। तमाकू पीने से बुद्धि मलिन हो जाती है। हवन करने से वायु शुद्ध होता है। कोशिश करने से यदि धन प्राप्त न हो तो अपना अपमान कभी न करे। ईश्वर बड़ा दयालु है उसके ऊपर भरोसा करो। क्या जिसने तुम्हें बनाया है वह तुम्हारा पालन न करेगा।

पाठ २१

वाक्यविचार (Syntax).

वाक्यविचार (Syntax) **में शब्दों को जोड़ कर वाक्य बनाने का विधान है।**

वाक्यविचार के नियम तीन प्रकार के हैं:—

अन्वय (Concord) **जिसमें यह वर्णन किया जाता है कि कौन शब्द लिङ्ग, पुरुष, वचन आदि में किसके समान होता है।**

हिन्दी में क्रिया का कर्त्ता के साथ, क्रिया का कर्म के साथ, संज्ञा का सर्वनाम के साथ, विशेषण का विशेष्य के साथ अन्वय होता है।

(२) क्रम (Order) जिसमें एक शब्द का वाक्य में स्थान नियत किया जाता है यह दो प्रकार का होता है एक साधारण (Grammatical) जिसमें शब्दों के साधारणतया रखने के नियम दिये हुए हैं।

दूसरा असाधारण (Rhetorical) जिसमें साधारण क्रम को पलट कर वाक्यार्थ में कुछ विशेषता कर देते हैं। छन्द बनाने में प्रायः यही क्रम आता है।

(३) अधिकार (Government) जिसमें एक शब्द के दूसरे शब्द के कारक आदि पर अधिकार का वर्णन है। अधिकार के नियम भाषा में केवल सम्बन्धवाचक शब्दों से सम्बन्ध रखते हैं।

पहिले अन्वय का वर्णन किया जाता है।

कर्त्ता, क्रिया तथा कर्म और क्रिया का अन्वय।

मैं पुस्तक को पढ़ता हूं। मैं आता हूं। वे आते हैं। तू आता है, मोहन मारा जाता है।

नियम १, जब कर्तृकारक का चिन्ह 'ने' उसके साथ नहीं होता तो क्रिया का लिङ्ग, पुरुष और वचन कर्त्ता के लिङ्ग, पुरुष और वचन के अनुसार होता है। परन्तु आदर के लिए क्रिया बहुवचन में लाते हैं जैसे गुरु जी आये।

उन्होंने किताब पढ़ी। मैंने पत्र लिखा, उसने मैं मारी हूँ।

नियम २, जब कर्तृकारक के उसका चिन्ह 'ने' लाते हैं और कर्म के साथ उसका चिन्ह 'को' नहीं होता तो क्रिया का लिङ्ग, वचन और पुरुष कर्म के लिङ्ग, वचन और पुरुष के समान होता है।

मैंने किताब को पढ़ा। उसने मुझ को मारा।

नियम ३, जब कर्तृकारक का चिन्ह 'ने' और कर्म का चिन्ह 'को' उपस्थित हो तो क्रिया एकवचन, पुंलिङ्ग, अन्य पुरुष में होती है।

मैं काम करता था। वे पुस्तक पढ़ते हैं। राम पत्र लिखेगा।

नियम ४, अपूर्णभूत, हेतुहेतुमद्भूत, वर्त्तमान, भविष्यत् कालों में क्रिया का लिङ्ग-वचन आदि कर्तृकारक के ही अधीन होता है।

राम पढ़ता था, राम और लक्ष्मण पढ़ते थे।

नियम ५, जब कर्तृकारक एक से अधिक एकवचन शब्द 'और' से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन में आती है।

न राम पढ़ता है न लक्ष्मण
न मोहन सोता है न सोहन
मोहन या सोहन आता है।

नियम ६, परन्तु जब एक से अधिक कर्तृकारक एकवचन शब्द 'न' से या 'या' से जुड़े हों तो क्रिया एकवचन में होती है।

राम आयेगा और खाना खायेगा
मोहन न पढ़ता है न लिखता है

नियम ७, जब एक कर्त्ता की एक से अधिक क्रियायें हों तो कर्त्ता को एकबार ही लाते हैं।

हम तुम और मोहन चलेंगे
मोहन और तुम चलोगे
हम और मोहन चलेंगे

नियम ८, यदि तीनों पुरुष के कर्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष में होगी। यदि मध्यम और अन्य हों तो मध्यम में, यदि उत्तम और अन्य हों तो उत्तम में।

भेद्य, भेदक का अन्वय

उसका घोड़ा, उसकी घोड़ा, उसके घोड़े, उसकी घोड़ियाँ। नियम ९, भेदक का चिन्ह उसी लिङ्ग, वचन में होता है जो भेद्य का लिङ्ग और वचन है।

संज्ञा सर्वनाम का अन्वय

जिसको तुमने बुलाया वही आई, जिसको तुमने बुलाया वही आया, जिनको तुमने बुलाया वही आईं, जिनको तुमने बुलाया वही आये।

नियम १०, सर्वनाम लिङ्ग, वचन उस संज्ञा के लिङ्ग वचन के तुल्य होते हैं जिसकी जगह पर वह आते हैं।

विशेष्य विशेषण का अन्वय

छोटा बालक, छोटे बालक, छोटी बालिका, छोटी बालिकाएं।

नियम ११, विशेषण का लिङ्ग, वचन विशेष्य के लिङ्ग, वचन के अनुसार होता है।

छोटे लड़के लड़कियां, बहुत सी लड़कियां लड़के।

नियम १२, यदि विशेषण एक और विशेष्य कई हों तो विशेषण का लिङ्ग वचन, समीपवर्ती विशेष्य के समान होता है।

अब कुछ नियम क्रमसम्बन्धी लिखे जाते हैं।

वाक्य में दो भाग होते हैं।

(१) उद्देश्य (Subject) जिसके विषय में कुछ कहा जाय (२) विधेय (Predicate) जो कुछ उद्देश्य के विषय में कहाजाय। मोहन घर को जाता है, में 'मोहन' उद्देश्य और 'घर को जाता है' विधेय है

नियम १३, उद्देश्य सदा विधेय से पहिले आता है।

नियम १४, क्रिया सदा वाक्य के अन्त में आती है।

नियम १५, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, क्रिया-विशेषण प्रायः उद्देश्य और क्रिया के मध्य में आते हैं।

नियम १६, संज्ञा के विशेषण, और भेद को (यदि वह संज्ञा भेद्य हो) संज्ञा से पूर्व रखते हैं। जैसे काला घोड़ा, उसका घोड़ा।

नियम १७, जब भेद्य- घर' आदि स्थान वाचकशब्द् हों तो प्रायः भेद्य का लोप हो जाता है। जैसे 'हम रामके गये' अर्थात् 'हम राम के घर गये'।

नियम १८, कभी कभी प्रश्न करने में या जहाँ वक्ता अपने सम्मुख पुरुष की बात का निषेध करे तो क्रिया का लोप कर देते हैं जैसे 'तुम को उससे कुछ सम्बन्ध नहीं' 'जब किया नहीं तो डर कैसा'।

नियम १९, पूर्वकालिक क्रिया को उस क्रिया के निकट रखते हैं जिससे वाक्य समाप्त होता है। जैसे 'वह रोटी खाकर चला गया'।

नियम २०, विशेषण को विशेष्य के समीप रखना चाहिए।

अधिकार।

नियम २१ सम्बन्धवाचक शब्द् प्रायः सम्बन्धकारक संज्ञा या सर्वनाम के साथ आते हैं जैसे उसके बिना, मेरे पास, कोठे के ऊपर इत्यादि।

पृथक्त्व सूचक शब्द् कभी अपादान के पीछे भी आते हैं जैसे उससे दूर, मुझ से अलग।

पाठ २२

वाक्यविच्छेद (Analysis)

वाक्य के उन भागों को पृथक् पृथक् कर देना जिनसे मिलकर वह बना है वाक्य विच्छेद (Analysis) कहलाता है।

वाक्य (Sentence) शब्दों का वह समूह है जिससे कहने वाले का कुछ आशय ज्ञात हो।

वाक्य के दो भाग होते हैं उद्देश्य और विधेय। उद्देश्य (Subject) वह है जिसके विषय में कुछ कहा जाय। विधेय (Predicate) वह है जो कुछ उद्देश्य के विषय में कहा जाय।

वाक्य तीन प्रकार के होते हैं साधारण वाक्य (Simple Sentence)। मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)। संयुक्त वाक्य (Compound Sentence).

साधारण वाक्य (Simple Sentence)

साधारण वाक्य में केवल एक उद्देश्य और एक विधेय होता है जैसे लड़की गाती है।

उद्देश्य के दो भाग होते हैं। एक कर्तृकारक, दूसरा उसका विशेषण। विशेषण होना कोई आवश्यक बात नहीं है। हो या न हो। 'अच्छी लड़की गाती है' में अच्छी विशेषण है परन्तु 'लड़की गाती है' में विशेषण नहीं।

कर्तृकारक में नीचे लिखे शब्द हो सकते हैं।

(१) संज्ञा जैसे 'राम आया'।

(२) सर्वनाम, जैसे 'मैं आया'।

(३) विशेषण जैसे 'दुखियारे आ रहे हैं।

(४) क्रिया का सामान्य रूप जैसे 'सत्यबोलना अच्छा है'।

(५) पद जैसे 'घरमें बैठना अच्छा नहीं"।

कर्तृविशेषण (Adjunct to Subject) में निम्न लिखित शब्द आसकते हैं।

(१) विशेषण जैसे 'बुरा लड़का आया'।

(२) भेदक जैसे 'उसका लड़का आया'।

(३) पद जैसे 'सब मनुष्यों के घर की बात कही जा रही है'।

विधेय के कई भाग होते हैं परन्तु विधेय में क्रिया का होना अत्यावश्यक है, चाहे प्रकट हो चाहे लुप्त। यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसका कर्म अवश्य होता है।

निम्न लिखित शब्द कर्म (Object) हो सकते हैं।

(१) संज्ञा जैसे 'उसने मोहन को मारा'।

(२) सर्वनाम जैसे 'उसने तुमको मारा'।

(३) विशेषण जैसे 'उसने बुरों को मारा'।

(४) क्रिया का सामान्य रूप जैसे 'वह सोना नहीं चाहता'।

(५) पद जैसे इसने मेज़ के ऊपर की पुस्तक उठाली"।

क्रियाविशेषण (Adverbial Adjunct) निम्न लिखित शब्द हो सकते हैं।

(१) क्रियाविशेषण जैसे 'वह झट चला गया'।

(२) करण, अपादान, सम्प्रदान, अधिकरण, कारक जैसे उसने मेज़पर मेरेलिए हाथसे पुस्तक लेकर सन्दूक़ में रखदी।

यदि क्रिया से उसका आशय पूरा न हो तो उसके साथ सहायक (Complement) शब्द भी आते हैं जैसे 'वह मनुष्य है' में 'मनुष्य' सहायक शब्द है।

कुछ वाक्यों का व्यवच्छेद नीचे लिखा जाता है।

१ देवदत्त ने कल मोहन को छड़ी से मारा।
२ उसका पिता बड़ा आदमी है।
३ कारण कवन नाथ मोहि मारा।

उद्देश्य		विधेय			
कर्तृ कारक	कर्तृ विशेषण	क्रिया	कर्म	सहायक शब्द	क्रिया-विशेषण
१ देवदत्त ने	...	मारा	मोहनको	...	छड़ी से
२ पिता	उसका	है	...	बड़ा आदमी	...
३ नाथ	...	मारा	मोहि	...	कवन कारण

प्रश्न

नीचे के वाक्यों का व्यवच्छेद करो।

१—तुम क्या लिख रहे हो। २—मैं कई दिन से बीमार था। ३—मैं बाज़ार से एक पुस्तक ख़रीदना चाहता हूँ। ४—दुःख में केवल ईश्वर ही सहायता करता है। ५ ऋषि लोग वेदमन्त्रों का उच्चारण कर रहे हैं। ६—भारतवर्ष में आज कल अकाल पड़ रहा है। ७—धर्मात्मा लोगों को कभी दुःख नहीं होता। ८—सत्य के पालन में सदा तत्पर रहो। ९—मनुस्मृति में प्रत्येक मनुष्य के कर्तव्य का विधान है।

---

२३ पाठ

मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)

मिश्रित वाक्य वह है जिस में एक स्वतन्त्र वाक्य और एक अथवा अनेक आश्रित वाक्य हों।

स्वतन्त्र वाक्य (Independent Clause) वह है जिस का आशय स्वयं ही पूरा हो जाय।

आश्रित वाक्य (Subordinate Clause) वह है जो किसी अन्य वाक्य से मिलकर ही पूरा आश्रय दे सके।

'वह आदमी जिससे तुम कल बातें कर रहे थे आज मर गया'। इस वाक्य में "वह आदमी आज मर गया" स्वतन्त्र वाक्य और "जिससे तुम कल बातें कर रहे थे" आश्रित वाक्य है।

आश्रित वाक्य तीन प्रकार के हैं।

(१) संज्ञावाक्य (Noun Clause) जो संज्ञा की भाँति किसी क्रिया का कर्त्ता, कर्म, आदि हो। जैसे "मैं कहता हूं कि तुम बुरे आदमी हो" में 'तुम बुरे आदमी हो' 'कहता हूं' क्रिया का कर्म है। इसको संज्ञावाक्य कहेंगे।

(२) विशेषण वाक्य (Adjectival Clause) वह है जो किसी संज्ञा में विशेषता करे। जैसे 'वह किताब जो कल तुमने ख़रीदी थी खो गई' में 'जो कल तुमने ख़रीदी थी' 'किताब' का विशेषण होने से विशेषण वाक्य है।

(३) क्रियाविशेषण वाक्य (Adverbial Clause) वह है जो क्रिया के अर्थों में कुछ विशेषता करे या उसके व्यापार का समय स्थान आदि बताये, जैसे "मैं वहाँ गया था जहाँ तुम गये थे" में 'जहाँ तुम गये थे' स्थानबोधक होने से क्रियाविशेषण वाक्य है।

मिश्रित वाक्यों के व्यवच्छेद करने में स्वतन्त्र वाक्य को बता के फिर आश्रित वाक्यों को बताना चाहिए और हर वाक्य का व्यवच्छेद कर देना चाहिए।

"जो मकान तुमने मुझे दिया था उसमें आज कल डिप्टी साहिब रहते हैं" यह मिश्रित वाक्य है।

वाक्य	प्रकार	संयोजक शब्द	उद्देश्य		विधेय			
			कर्ता	कर्तृविशेषण	क्रिया	कर्म	सहायक	क्रियाविशेषण
(अ) उसमें आज कल डिप्टी साहिब रहते हैं	स्वतन्त्र वाक्य	...	डिप्टी साहिब	...	रहते हैं	...	...	(१) उसमें (२) आजकल
(ब) जो मकान तुमने मुझे दिया था	विशेषण वाक्य (अ) वाक्य के आश्रित	...	तुमने	...	दिया था	जो मकान	...	मुझे

प्रश्न ।

नीचे के वाक्यों का व्यवच्छेद करो ।

१–जब तक वे यहाँ न आवें मैं तो न जाऊँगा ।

२–किसने कहा कि कलक्टर साहिब आरहे हैं ।

३–जो बात कही जाय उसको मानो ।

४–जब जब मेंह बरसता है तब तब मेंढक बालत हैं ।

५–मैं नहीं समझता कि तुम क्या कहते हो ।

६–नगर वासियों से कह दो कि कल गङ्गातट पर मेला होगा ।

७–जो भले हैं वह दीना पर दया करते हैं ।

८–ज्योंही राजा दशरथ ने कहा राम वन को चल दिय ।

९–यदि पाठ याद न होगा तो दण्ड मिलेगा ।

१०–जो जागे सो पावे ।

११–जाके हृदय सांच है वाके हृदय आप ।

---

२४ पाठ

संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

संयुक्त वाक्य (Compound Sentence) उनको कहते हैं जिन में अनेक साधारण, अनेक मिश्रित, तथा कुछ मिश्रित और कुछ साधारण वाक्य हों । संयुक्त वाक्य में कई स्वतन्त्र वाक्य होते हैं । इनके कुछ उदाहरण आगे के चित्र में दिये जाते हैं ।

१, मैं आया और किताब पढ़ी—संयुक्त वाक्य ।

२, जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ । मैं बौरी ढूढन गई रही किनारे बैठ—संयुक्त वाक्य ।

३, यहाँ हरी निशिचर वैदेही । खोजत विप्र फिरें हम तेही ।

वाक्य	प्रकार	संयोजक शब्द	उद्देश्य		विधेय			
			कर्ता	कर्तृ विशेषण	क्रिया	कर्म	सहायक	क्रिया विशेषण
१ (अ) मैं आया	स्वतन्त्र वाक्य	...	मैं	...	आया	...	...	...
(आ) आर (मैं ने) किताब पढ़ी	स्वतन्त्र वाक्य	और	मैं ने	...	पढ़ी	किताब	...	...
२ (अ) तिनपाइयां	स्वतन्त्रवाक्य	...	तिन	...	पाइयां	...	...	...
(आ) जिन खोजा गहरे पानी पैठ	विशेषण वाक्य (अ) के आश्रित	...	जिन	...	खोजा	...	...	गहरे पानी पैठ
(इ) मैं बौरी ढूंढन गई	स्वतन्त्र वाक्य	...	मैं	बौरी	गई	...	...	ढूंढने
(ई) (मैं) रही किनारे बैठ	स्वतन्त्र वाक्य	...	मैं	...	बैठरही	...	...	किनारे
३ (अ) यहाँ हरी निशाचर वैदेही	स्वतन्त्र वाक्य	...	निशाचर	...	हरी	वैदेही	...	यहाँ
(आ) खोजत विप्र फिरें हम तेही	स्वतन्त्र वाक्य	...	हम	...	खोजत फिरें	तेही	...	हे विप्र

प्रश्न ।

निम्नलिखित वाक्यों का व्यवच्छेद करो।

यह बात सिद्ध है कि पाँच सहस्र वर्षों से पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई मत न था।

जिससे उत्पन्न होता है वह कारण और जो उत्पन्न होता है वह कार्य कहलाता है।

ईश्वर ही जगत् को रचता, पालता और विनाश करता है। सूर्य्य चन्द्र और तारागण ईश्वर की महती शक्ति का प्रतिपादन करते हैं।

तुम जानो तुम्हारा काम जाने, मैं कुछ नहीं जानता। जो लोग विद्याध्ययन में लगे रहते हैं वे सर्वदा आनन्दयुक्त रहते और ईश्वर को प्राप्त करते हैं।

---

२५ पाठ

शब्दरचना (Word Building)

अब कुछ शब्द बनाने के नियम दिये जाते हैं।

(१) कृदन्त ।

धातु के अंत में कुछ लगा कर जो संज्ञा बनाली जाती है उनको कृदन्त कहते हैं।

कृदन्त पाँच प्रकार के हैं।

(अ) कर्तृवाचक, जिससे कर्त्तापन का बोध हो। क्रिया के चिन्ह 'ना' को 'ने' करके उसके आगे 'वाला' या 'हारा' लगा दो। या 'ना' का लोप करके उसके आगे 'क', 'इया, या 'वैया' लगा दो तो कर्तृ-वाचक शब्द बन जायँगे।

जैसे करने हारा, गाये वाला, खिवैया, पूजक आदि।

(आ) कर्मवाचक, जिससे कर्मपन पाया जाय—और यह सकर्म्मक क्रिया के सामान्यभूत क्रिया के आगे 'हुआ' या 'हुई' लगा देने से बनती है।

(इ) करणवाचक, जिससे करणत्व पाया जाय। यह 'ना' को 'नी' करदेने से बनती है। जैसे 'कतरनी'।

(ई) भाववाचक, जिससे भाव पाया जाय। क्रिया के चिन्ह 'ना' को दूर करदो या 'ना' को 'न' करदो या 'ना' दूर करके आई, लाई, इट आदि लगा दो।

जैसे लेनदेन, मारपीट, बुआई, सिलाई, बिलबिलाहट।

(उ) क्रियाद्योतक—हेतुहेतुमद्भूत जैसा रूप इसका भी बनता है कभी 'हुआ' और जोड़ देते हैं।

जैसे करता हुआ, मारता मारता इत्यादि।

(२) तद्धित।

संज्ञाओं से बने हुए शब्द तद्धित कहलाते हैं। यह भी पांच प्रकार के हैं।

(१) अपत्यवाचक, जिससे सन्तानत्व पाया जाय। इसके बनाने की रीति यह है कि कहीं शब्द के पहले अक्षर की वृद्धि कर देते हैं अर्थात् 'अ' का 'आ', 'इ' का 'ऐ', 'उ' का 'औ', 'ऋ' का 'आर्' कर देते हैं। जैसे 'संसार' से 'सांसारिक' 'शिव' से 'शैव' 'ऊर्मिला' से 'और्मिलेय' कभी अंत में ई या इक से लगा देते हैं। जैसे 'रामानन्द' से 'रामानन्दी' इत्यादि।

(२) कर्तृवाचक यह 'वाला' या 'हारा' लगाने से बनता है। जैसे मिट्टीवाला, लकड़हारा।

(३) भाववाचक। जो ता, त्व, आई आदि लगाने से बनता है जैसे मूर्खता, मनुष्यत्व, चतुराई।

(४) गुणवाचक। जो मान, वान, दाई, दायक लगाने से बनता है। जैसे बुद्धिमान, बलवान, दुखदाई, लाभदायक।

(५) ऊनवाचक जिससे लघुत्व पाया जाय। यह शब्द 'आ' 'ई' 'इया' लगा देने से बनते हैं। जैसे खटिया आदि।

(३) समास।

जहाँ विभक्तियों का लोप होकर कई पदों का एक पद बनजाता है उसे समास कहते हैं। समास छः प्रकार के हैं।

(१) कर्मधारय, जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ संयोग हो। जैसे महाराज, परमात्मा।

(२) तत्पुरुष वह है जिसमें पूर्वपद कारक के छोड़ किसी दूसरे कारक का हो और दूसरे पद का अर्थ प्रधान हो जैसे नरेश।

(३) बहुव्रीहि वह है जो कई पदों से मिल के अपने अर्थ के छोड़ कर किसी और साङ्केतित अर्थ का प्रकाश करे। जैसे चतुर्भुज, मृगलोचन।

(४) द्वन्द्व वह है जिसमें कई पदों के बीच 'और' का लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे फलफूल, राजा रानी।

(५) अव्ययीभाव वह है जिसमें अव्यय के साथ कोई शब्द मिल कर क्रियाविशेषण हो जाय। जैसे यथाशक्ति।

(६) द्विगु जिसमें पूर्व पद संख्या वाचक हो। जैसे त्रिभुवन

ये सब समास संस्कृत के हैं। भाषा में इनका प्रयोग नहीं होता किन्तु संस्कृत के शब्दही भाषा में आते हैं। इन समासों के बनाने में सन्धियों के ज्ञान की आवश्यकता होती है इसलिए आगे कुछ सन्धियों के नियम दिये जाते हैं।

---

२६ पाठ

सन्धिविषय।

(१) दो ह्रस्व या दीर्घ समान स्वरों के मिलने से दीर्घ स्वर हो जाते हैं। जैसे राम + अनुज = रामानुज, कवि + इन्द्र = कवीन्द्र।

(२) अकार, या आकार से इ या ई मिले तो ए हो जाता है, उ या ऊ मिले तो 'ओ' हो जाता है। जैसे महा × इन्द्र = महेन्द्र, महा + उत्सव = महोत्सव।

(३) अकार या आकार से 'ए' मिले तो 'ऐ' और 'ओ' मिले तो 'औ' हो जाता है। जैसे तथा—एव = तथैव, वन + ओषधि = वनौषधि।

(४) इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ से परे इनसे भिन्न कोई स्वर हो तो इ, ई का य, उ, ऊ, का व, ऋ, ॠ, का र्, ऌ, ॡ का ल हो जाता है। जैसे इति + आदि = इत्यादि। प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर।

(५) ए, ऐ ओ, औ से परे भिन्न स्वर हो तो ए का अय्, ऐ का आय् ओ का अव्, औ का आव् हो जाता है।

(६) सकार या कवर्गीय अक्षर से परे श् या चवर्गीय अक्षर हो तो उनका मिल कर श् या चवर्गीय अक्षर हो जाता है। जैसे सत् + चित् = सच्चित्।

(७) त् और श् मिल कर च्छ हो जाता है जैसे त[illegible] + शिव = तच्छिव।

(८) किसी अक्षर के पीछे यदि कोई अनुनासिक शब्द हो तो उस अक्षर का भी सवर्गीय अनुनासिक हो जाता है। जैसे तत् + मात्रम् = तन्मात्रम्।

(९) यदि विसर्ग के पहिले इ, उ हो और पीछे क, ख, प और फ हों तो विसर्ग का 'ष' हो जाता है जैसे निः + कपट = निष्कपट।

(१०) विसर्ग से पहिले 'अ' और पीछे वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवाँ अक्षर हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

(११) यदि विसर्ग से पहिले 'अ' और 'आ' को छोड़ कर कोई अन्य स्वर हो और पीछे वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवाँ अक्षर हो तो विसर्ग का र् हो जात है। जैसे निः + गुण = निर्गुण।

इनके अतिरिक्त और भी नियम हैं जो इस छोटी सी पुस्तक में दिये नहीं जा सकते।

इति